बच्चों का इन्द्रधनुष

10 रुपये

हमारी बात

प्यारे दोस्तों,

हमारी आज की दुनिया बहुत सारी बातों में पिछली पीढ़ी की दुनिया से बहुत अलग है। ऐसा बहुत कुछ है जो पिछले 30-40 सालों में ही आया है, लेकिन एक चीज़ है जो सबसे ज्यादा तेजी

से हमारे जीवन पर छाती नज़र आती है। जिससे हम चारों ओर से घिरे हैं-हर पल, हर कहीं और इसका भारी प्रभाव हमारे मन और जीवन पर है-शायद सबसे ज्यादा प्रभाव।

ये हैं विज्ञापन। क्या तुमने ध्यान दिया है-सड़कों पर विज्ञापन, बसों में विज्ञापन, पत्र-पत्रिकाओं में, अखबारों में रेडियो पर, टीवी पर-हर कहीं। हम चारों ओर इनसे घिरे हैं। हमारी पसंद के प्रोग्राम के बीच में वो बार-बार लगातार कूद-कूद कर आते हैं-चाहे हमें अच्छा लगे या नहीं। लोग कहते हैं-इन विज्ञापनों के कारण ही तो हमें प्रोग्राम देखने को मिल रहा है, क्योंकि कंपनी ने प्रोग्राम को विज्ञापन दिखाने के लिये पैसा दिया है। हम तो प्रोग्राम देखते हैं, विज्ञापन नहीं।

पर असल में बात इतनी सरल नहीं। बार बार बोली जाने वाली या दिखाई जाने वाली चीजें हमारे मन पर असर डालती हैं-हम चाहें या न चाहें। बहुत सारी छवियां हमारे मन में बस जाती हैं। एक झूठ यदि हमारे सामने हज़ार बार बोला जाए तो वह कुछ कुछ सच तो लगने ही लगता है। उस बात में दम लगता है। तभी तो ये चीख चीख कर, बहला कर, हंसा कर, लच्छेदार भाषा में हमें फुसलाते हैं-यह क्रीम खरीदो, या कोल्ड ड्रिंक खरीदो या पान मसाला या चिप्स या शैम्पू -उसके लिये हमारे पसंद के फिल्म स्टार, खिलाड़ी या सुंदर चेहरे या भड़काऊ शरीर, सभी का इस्तेमाल किया जाता है।

और हम सब इनके शिकार हैं-बच्चे या बड़े- जो लगातार इन चाशनी में डूबे झूठों को सुनते रहते हैं। इनके आकर्षण में खिंचे चले जाते हैं, अपनी जेबें खाली करने के लिये। हमें कहीं अन्दर ऐसा भरोसा होने लगता है कि सच्चा आनन्द तो इन चीजों को हासिल करने से ही मिलने वाला है।

यह हमारे युग का सबसे बड़ा छलावा है-हर आदमी, चाहे बच्चा हो या वयस्क, को केवल खरीददार बनाना। और यही हम सब के लिये बड़ी चुनौती भी है-कैसे इस विवेक को बनाए रखें कि क्या हमारे लिये सचमुच अच्छा है और क्या नहीं।

बहुत प्यार सहित

अंशुमाला

बच्चों का इन्द्रधनुष

मासिक, वर्ष 2, अंक 1, जून 2006

पत्र व रचना भेजने का पता :
इन्द्रधनुष, हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति,
तीर्थ निवास, इंजन घर, संजौली, शिमला-6
फोनः 0177-2842972, 2640873
फैक्सः 0177-2645072
मोबाइलः 9418000730

पत्रिका लगवाने के लिये इनको लिखें :
भीम सिंह, हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति,
सौली खड्ड, मंडी, हि० प्र० - 175001
फोनः 01905-237478, 9418073190
फैक्सः 01905-237878

एक प्रति का मूल्यः 10 *रुपए*
व्यक्तिगत वार्षिक शुल्कः 120 *रुपए*
संस्थागत वार्षिक शुल्कः 120 *रुपए*
बाहरी देशों में वार्षिक शुल्कः $ 15

इस अंक में...

हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा तैयार

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अंशुमाला गुप्ता, तीर्थ निवास, इंजनघर, संजौली, शिमला द्वारा स्वामित्व अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क के लिये सवितार प्रैस, चंडीगढ़ द्वारा मुद्रित

चील और धामन

-सुरेश कुमार साहिल

कई दिनों तक चील आकाश में भूखी-प्यासी शिकार की तलाश में मंडराती रही। जंगल में उसे कहीं मांस का कोई लोथड़ा दिखाई न पड़ा और न कोई छोटा जीव, जिसे वह अपना आहार बना सके।

एक रोज उसे धामन (घोड़ापछाड़) सर्प दिखाई पड़ा। उसके मुंह से लार टपकने लगी। भूख की आग और प्रचण्ड हो उठी। घोड़ापपछाड़ किसी कार्य से पतली-पतली पगडण्डियों पर पूरे हर्ष-उन्माद से फुदकता-मचलता जा रहा था। अचानक चील ने उसे झपट्टा मारकर पकड़ लिया और उसे ले उड़ी, किन्तु इस बार हड़बड़ी में एक ऐसी गलती कर गयी, जो उसने आज तक न की थी। उसने धामन को पूंछ के स्थान पर मुंह की ओर पकड़ लिया।

आमतौर पर वह पूंछ की तरफ से सर्पो को पकड़ती थी। ऐसे में वे कमजोर और निढाल हो जाते। फिर चील उन बेबस-पसली टूटे सर्पो को किसी एकान्त में ले जाकर खूब मजे से फुरसत में, नोंच-नोंच कर चट कर जाती। मगर इस बार संयोग से उसका पासा उलटा पड़ गया-पूंछ के स्थान पर टकरा बैठी धामन के मुंह से।

फिर भी, उसे खासे वेग से लिए उड़े जा रही थी। धामन अधीरता से बोला-'छोड़ दो अन्यथा आज गजब हो जायेगा।' उसका मुंह चील की चोंच से बाहर था, लिहाज़ा उसे बोलने में कोई तकलीफ नहीं हो रही थी।

चील ने धौंस जमाई- 'गजब क्या होगा बावरे! आज तुझे मजे से छलकर अपनी कई दिनों की भूख शान्त करूंगी।'

'अगर तूने मुझे जरा भी नोंचा-खसोटा तो तेरी खैर नहीं। तेरी भलमनसी इसी में है, कि तू मुझे चुपचाप नीचे सही-सलामत छोड़ दे।'

'हाथ आया शिकार छोड़ना हम चीलों के लिए बुजदिली मानी गई है। तुझे जो करना है कर, मुझे
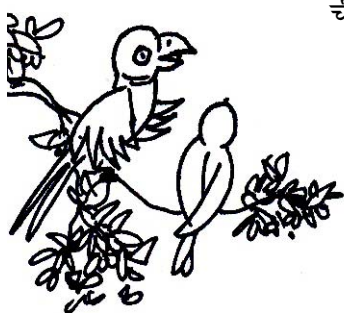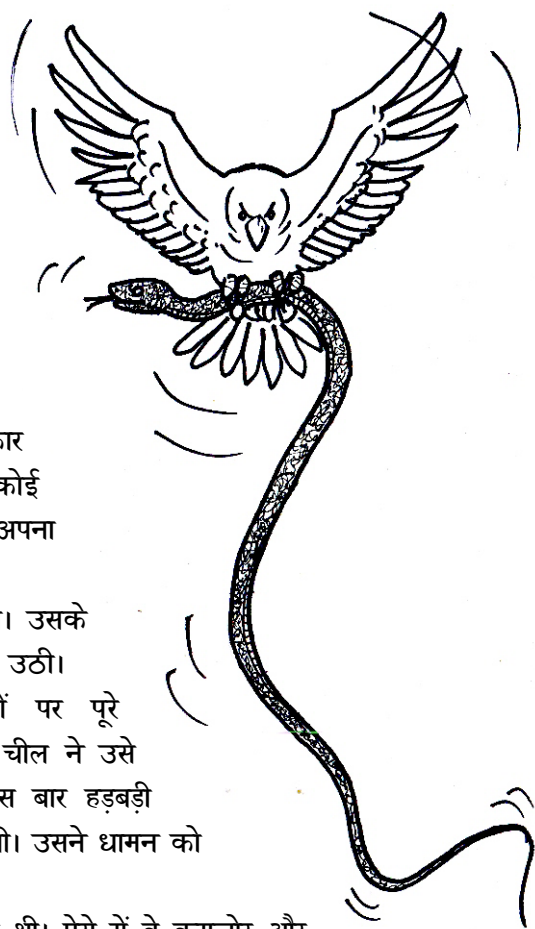
अपना काम करने दो।'

दोनों के वाक्‌युद्ध का तमाशा सारे जंगल के पशु-पक्षी हैरानी से देखने लगे। जंगल के इस अद्‌भुत युद्ध को हर प्राणी अपनी आंखों में स्मृति बनाने को आतुर था। अब नौबत द्वन्द्व युद्ध तक आ पहुंची। चील उसे लिए चक्कर पर चक्कर काटे जा रही थी।

जिन्दगी और मौत के इस महासमर में किसे जिन्दगी नसीब होगी, और किसकी किस्मत में मौत लिख जायेगी, यह उत्सुकता- व्यग्रता सभी के चेहरों पर साफ-साफ झलक रही थी।

धामन अपनी पूंछ पूरी ताकत से उठा, चील की गर्दन में धीरे-धीरे लपेटने लगा। चील की गर्दन अब धामन की कुण्डली में कैद। कुण्डली के कसाव में चील फड़फड़ाने लगी। और चन्द क्षणों में उसका मंसूबा मिट्टी में मिलता नजर आने लगा। दोनों ओर से जोर आजमाइश का दौर शुरू हुआ। धामन पूरे बल से उसकी गर्दन किसी गीले कपड़े की भांति धर-धर निचोड़ने लगा।

इस अनोखे आकाशीय युद्ध पर सभी आंखें गड़ाये गम्भीरता से देख रहे थे।

चील चरखी की भांति उसे नचाते-नचाते आखिरकार धड़ाम से जमीन पर गिरी। उसकी आंखों के सामने मौत भयंकर ताण्डव नृत्य करने लगी। वह बेबसी में बोली-'छोड़ दो धामन भैया! जल्दबाजी में तुम्हें पहचान न सकी, अब आइन्दा जीवित सर्पो को अपना निवाला कभी नहीं बनाऊंगी। मुझे क्षमा कर दो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, पांव पड़ती हूं।'

धामन किसी वीर सैनिक की भांति क्रोध में दहाड़ा-'युद्ध करने से रोक रहा था, पर तेरी जिद और अकड़ ने तुझे इस स्थिति में पहुंचा दिया। अब मैं नहीं चाहता कि तू जीवित रहकर हम जीवित सर्पो को अपना आहार बनाती रहे।'

इस सम्वाद-विवाद के मध्य अन्ततः चील की सांसें एकाएक टूट गयीं। रक्त की कई धाराएं उसकी गर्दन से छल-छल छल-छल, करती हुई बह निकलीं। फिर उन पर भिनभिनाती मक्खियां धामन की जीत का जश्न मनाने लगी। इधर भालू, बन्दर, लोमड़ी, तोता, मैना सहित तमाम पशु-पक्षी धामन की जीत पर तालियां पीट-पीट कर उसका खूब उत्साहवर्द्धन करने लगे। इस अनहोनी-अनोखी जीत पर सभी हैरान थे।

धामन चील को छोड़ कर चला, फिर भुरभुरी मिट्टी में बड़ी मौज से लोट लगायी, ताकि नन्हें-नन्हें घाव मुंद जाए और उन पर चींटियां- मक्खियां अतिक्रमण न कर पायें।

'अनुराग' पत्रिका से साभार

हाय गर्मी!

घड़े, पंखे, कूलर, फ्रिज–जैसी ढेरों चीजें आदमी ने ईज़ाद कीं, ताकि इस भयंकर गर्मी से छुटकारा पा सके। लेकिन कुदरत ने क्या इंतजाम किया था गर्मी से बचाने के लिये? इनके बिना वह क्या करता था? और फिर कुदरत में दूसरे जीव ठंडक के लिये क्या करते हैं?
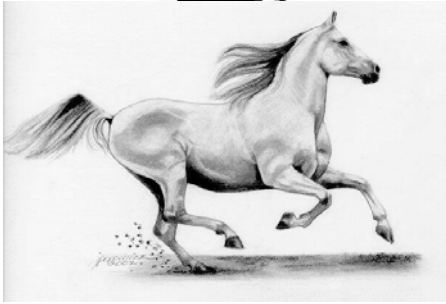
- आदमी और घोड़े पसीना निकालते हैं- जैसे जैसे यह पसीना उड़ता जाता है, उनका शरीर ठंडा होता जाता है।

- कुत्ते तेज गर्मी में अपनी जीभ बाहर निकाल कर हांफते हैं। इससे जीभ से पानी लगातार उड़ता रहता है और उन्हें ठंडा करता रहता है। उनके शरीर पर बाल होने के कारण शरीर से पसीना नहीं निकल सकता।

- हाथी अपनी बड़े बड़े कानों को हिलाते हैं। इससे उन्हें हवा तो मिलती ही है, पर साथ ही कानों में दौड़ता खून ठंडा होता जाता है जो उनके पूरे शरीर में दौरा करके शरीर को ठंडा करता है।

- भैंसे पानी में तैरती हैं और अपने शरीर पर कीचड़ थोप कर अपने को ठंडा रखती हैं।

- खरगोश के शरीर पर भी नर्म रोएं होते हैं और हमारी तरह पसीने की ग्रंथियां नहीं होतीं। ऐसे में जब वे तेज दौड़ते हैं और सारा शरीर गर्म हो जाता है तो वो अपने को ठंडा करने के लिये क्या करते हैं? वे अपने बड़े बड़े कान ऊपर खड़े कर लेते हैं। इससे हवा उनके कानों में बहते खून को ठंडा करती रहती है। यही खून उनके शरीर को ठंडा करता है।

हल्के या गहरे रंग की चमड़ी

क्या तुमने कभी सोचा है कि पृथ्वी के गर्म इलाकों के लोगों की चमड़ी गहरे रंग की क्यों होती है? और इसके विपरीत ठंडे मुल्कों के लोग ज्यादा हल्के रंग के क्यों होते हैं?

यह भी कुदरत का शरीर को ठंडा करने का तरीका है। गहरे रंग, खासकर काला रंग आसानी से गर्मी या ऊष्मा को बाहर विकीर्ण या radiate कर सकते हैं। इसलिये भूरे लोग ज्यादा गर्मी सहन कर सकते हैं। उनके शरीर से खून की गर्मी लगातार बाहर विकिरण होती रहती है। दूसरी ओर हल्के और सफेद रंग से बहुत कम ऊष्मा विकीर्ण होती है। तो हल्के रंग की चमड़ी के लोग अपने खून और शरीर की गर्मी को आसानी से नहीं खोते और ठंडी जगहों में निवास कर सकते हैं। पर यही कारण है कि उनके लिये तेज गर्मी सहन करना बहुत कठिन होता है।

गुनगुनाती केतली

केतली में पानी डालकर आग पर चढ़ाने के कुछ ही देर बाद एक सीटी जैसी आवाज आनी शुरू हो जाती है। इसे केतली का गुनगुनाना कहा जाता है। यह आवाज धीरे-धीरे बढ़ती है परन्तु पानी उबलना शुरू होते ही एक दम बंद हो जाती है।

केतली के तले से सटी पानी की तह सबसे पहले गरम होती है। जैसे-जैसे ताप बढ़ता है वैसे-वैसे तले पर भाप के बुलबुले (हवा के बुलबुले नहीं) बनते हैं। पानी से हल्का होने के कारण ऊपर उठते हैं और ऊपर के ठंडे पानी के संपर्क में आते हैं, सिकुड़ते हैं और फूट जाते हैं। भाप के असंख्य बुलबुलों के फटने से गुनगुनाने की आवाज पैदा होती है। जैसे-जैसे भाप के और बुलबुले बनते और फूटते हैं, ये आवाज बढ़ती जाती है, परन्तु अंत में सारा पानी उबलने के तापमान तक गरम हो जाता है और भाप के बुलबुलों का फूटना भी बंद हो जाता है। क्योंकि केतली के सारे पानी का तापमान एक समान हो जाता है।
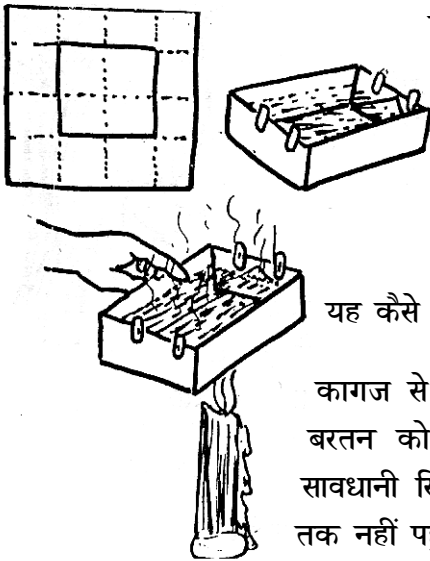
यह कैसे हो सकता है? कागज तो आग पकड़ लेता है भई!

कागज से कटोरी या तश्तरी के आकार का बरतन बना लो। फिर इस बरतन को पानी से भर कर जलती हुई मोमबत्ती की लौ पर रखो। सावधानी सिर्फ एक ही रखनी है कि आग की लौ कागज के उस भाग तक नहीं पहुंचनी चाहिए जो पानी में नहीं डूबा है। साथ ही बरतन के कोने भी लौ से बचे रहने चाहिए।

कुछ ही देर में पानी उबलना शुरू हो जायेगा, कागज को बिना जलाये ही। पानी उस सारे ताप को खींच लेता है जो कागज लौ से प्राप्त करता है। और इस तरह कागज सौ डिग्री सैंटीग्रेड से और अधिक गरम हो ही नहीं पाता, क्योंकि यही पानी का क्वथनांक (boiling point) है, यानी वह तापमान जिस पर पानी भाप में बदलने लगता है। यह कागज के आग पकड़ने के तापमान से बहुत नीचा है।

चांदी का अंडा बनाना

एक अंड़ा लो। मोमबत्ती जलाकर अंडे के चारों ओर घुमाकर, मोमबत्ती के धुएं की कालिख उस पर लगने दो। जितनी ज्यादा कालिख लगेगी, जादू उतना जोरदार होगा।
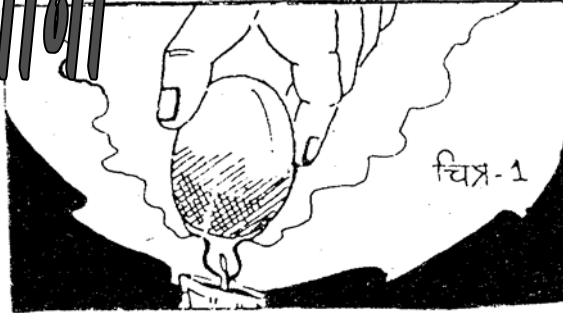
कांच के गिलास में या कांच के किसी बर्तन में पानी भरकर, काला किया गया अंडा डालो। पानी में डूबते ही अंडा चांदी का लगने लगेगा। पानी से निकालते ही वह पुन: काला हो जाएगा। प्रकाश के परावर्तन (reflection) के कारण ऐसा होता है। (देखें चित्र दो) काला करने से अंडे के चारों ओर कालिख की परत बन जाती है। इस पर पानी चिपकता नहीं और एक बारीक सी हवा की परत अंडे और पानी के बीच आ जाती है। इस परत के कारण ही प्रकाश का आन्तरिक परावर्तन (total internal reflection) होता है। यहां पर प्रकाश की किरणें पहले पानी से गुजर कर फिर हवा की पर्त तक जाती हैं। यानी ज्यादा से कम घने माध्यम तक। यह आन्तरिक परावर्तन के लिये जरूरी शर्त है।

सावधानी: अंडे पर कालिख लगाते समय मोमबत्ती की लौ से उंगलियां बचा कर रखें।
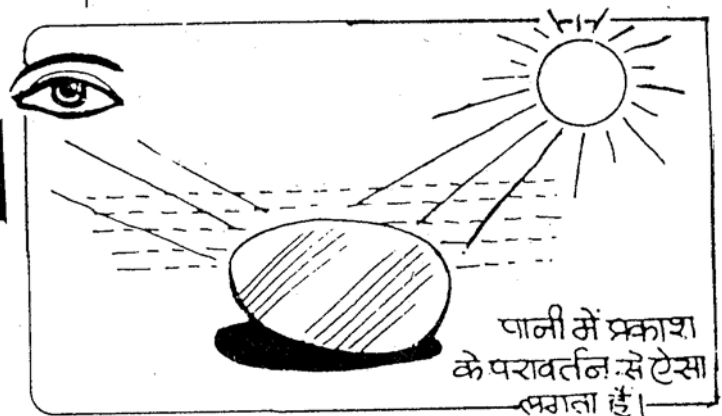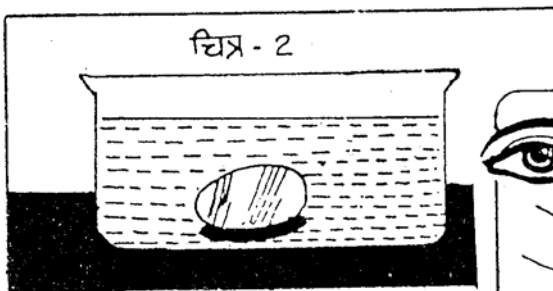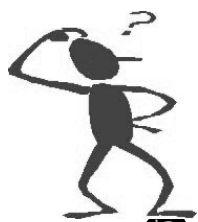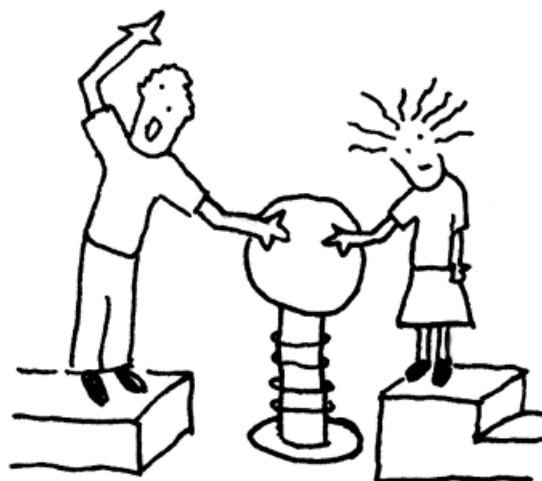
बहुत पहले से यह बात पता थी कि जानवरों के दिमागों में बिजली की तरंगें उठती हैं। लेकिन 1929 में हैन्स थर्बर नाम के एक जर्मन वैज्ञानिक ने मानव के दिमाग को भी परखा। उसने एक गैलवैनोमीटर का इस्तेमाल किया जो नाजुक बिजली के करंट को पकड़ सकता था। जब आदमी के सिर पर विद्युत चालक छड़ें (electrodes) लगाए गए तो ये बारीक बिजली की तरंगें पकड़ी जा सकीं। यही नहीं, इन तरंगों को जब ऐसी मशीन में डाला गया जो इन्हें एक लिखित ग्राफ में बदल सकती थी, तुरंत ऐसे चित्र सामने आए जिनसे दिमाग में होती हलचल को पकड़ा जा सकता था। यही आज EEG (electro encephalo-gram) कहलाता है।

EEG एक बहुत उपयोगी चित्र है। क्योंकि आदमी की उम्र से, उसके दिमाग के स्वास्थ्य से और वह क्या दिमागी काम कर रहा है, इन सबसे ये ग्राफ बदलते रहते हैं। शांत, आराम करते आदमी का दिमाग अल्फा तरंगें दिखाता है (देखो चित्र)। दूसरी ओर, अगर आदमी के दिमाग को कोई चुनौती हो, तो एक अनियमित हलचल दिखती है जो अल्फा ब्लॉक कहलाता है। ऐसे में अक्सर शांत अल्फा तरंगें बिल्कुल गायब भी हो जाती हैं। नींद में एक बिल्कुल दूसरी तरह का नमूना दिखता है जिसे डेल्टा तरंगे कहा जाता है।

जब संसार के सबसे महान वैज्ञानिकों में से एक, अल्बर्ट आइंसटीन के दिमाग को काम करते परखा गया, तो कुछ मजेदार बातें सामने आई। भारी दिमागी गणित करते हुए उनका दिमाग शांत था और अल्फा तरंगें दे रहा था। पर तभी उन्हें अपने पिछले काम में एक गलती नजर आ गई। तुरंत उनके दिमाग में हलचल मच गई और अनियमित अल्फा ब्लॉक तरंगे उठने लगीं।

मिरगी का पता लगाना

आज भी मिरगी जैसे रोग का पता लगाने और इलाज में EEG बहुत उपयोगी है। मरीज को कभी दौरा पड़ सकता है। दौरों में वह गिर सकता है, या उसे झटके लग सकते हैं या बेहोशी आ सकती है। या फिर बहुत उलझा हुआ या अजीब व्यवहार कर सकता है। ऐसे में उसके दिमाग में एक बिजली का तूफान आया होता है। बाद में जब यह तूफान थम जाता है, उसे अपनी इस स्थिति के बारे में कुछ याद नहीं रहता।
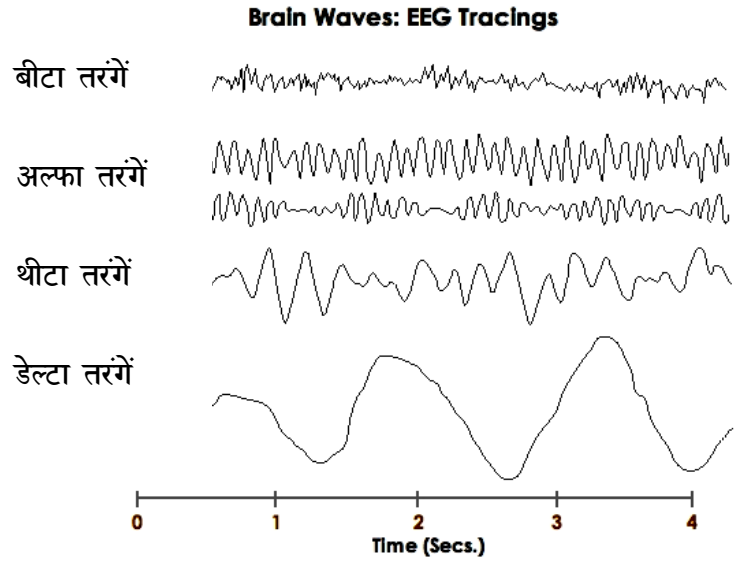
आत्मा कहां बसती है?

आदमी हजारों सालों तक अपने बारे में अटकलें लगाता रहा– आत्मा कहां बसती है, मन कहां, विचार कहां? पुराने समय में आदमी की चेतना का स्रोत हर कहीं माना गया, सिवाय दिमाग के। यह भी सोचा गया कि नाक से निकलने वाला बलगम सीधा मस्तिष्क से आता है। दिमाग को खून ठंडा करने वाला यन्त्र भी सदियों तक माना जाता रहा। यहां तक कि दिमाग का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा grey matter जहां सारे विचार पैदा होते हैं, उसे केवल 'बलगम का बना हुआ' माना जाता रहा। बल्कि 'आत्मा का वास' कभी दिल में, कभी कलेजी (liver) में, कभी किडनी या यकृत में माना जाता रहा। यही नहीं 17वीं सदी में यह भी कहा गया कि मटर के आकार की पीनल ग्रन्थि असल में आत्मा का निवास स्थान है।

18वीं सदी में पछली बार फ्रांज़ जोसेफ गॉल ने शरीर के सारे स्नायु जाल (nerves) को खोजते हुए पाया कि वे सब दिमाग से निकलती हैं और वहीं से सब कुछ संचालित होता है।

दिमाग के अंदर झांक सकना

किसी समय तक एक्स रे का इस्तेमाल केवल हड्डियों के चित्रों के लिये किया जाता था। क्योंकि एक्स किरणें हड्डियों के पार नहीं जा पाती थीं, हड्डियों की एक 'छाया' दिख जाती थी, जिसमें टूट-फूट या दूसरी समस्याएं देखी जा सकती थीं। लेकिन मांस का चित्र कैसे लिया जाए? उसे तो एक्स-रे पार कर जाती थीं।

1973 में दिमाग के अंदर के चित्र लेने का एक नया तरीका निकला- कैट स्कैन (CAT scan)। यह भी एक्स-रे का इस्तेमाल ही करता है लेकिन कुछ अलग ढंग से। दिमाग के चारों ओर से एक्स किरणें छोड़ी जाती हैं। यह बात आज मालूम है कि मस्तिष्क के अलग अलग हिस्से कम या ज्यादा किरणों को सोख सकते हैं। किरणें डालने के बाद कम्प्यूटर की मदद से यह मापा जाता है कि दिमाग के किस हिस्से ने कितनी किरणें सोखीं। इसके आधार पर एक कम्प्यूटर चित्र बनता है जो रंगों से दिखाता है कि किरणें कहां कम सोखी गई, कहा ज्यादा। गहरे रंग कुछ और कहानी बताते हैं, हलके कुछ और।

जैसे कहीं पर द्रव हो तो गहरा रंग दिखता है। कहीं पर जमा खून या गांठ हो तो हल्का, और इससे डाक्टर दिमाग के अंदर झांक कर समस्याएं देख सकते हैं।

कैट स्कैन चित्र

लेकिन यह काम केवल कम्प्यूटर से ही संभव हो सका। क्योंकि कम्प्यूटर दिमाग की पतली पतली परतों का अध्ययन करता रहता है, और करीब 15 लाख बिन्दुओं पर देखता है कि किरणें कैसे सोखी गईं। फिर इन सबको मिला कर पूरे दिमाग का नमूना चित्र तैयार करता है। CAT स्कैन मशीन बनाने वाले दो वैज्ञानिकों को नोबल पुरस्कार मिला था।

एक शाम जादूगर के साथ

जे. बी. एस. हैल्डैन
–रूपांतरणः पुष्पा अग्रवाल

मैंने अपने जीवन में कुछ बहुत ही अजीबो गरीब भोजन किए हैं। अगर मैं चाहूं तो आपको एक खदान में किए गए भोजन या मॉस्को के एक भोजन या फिर एक करोड़पति के साथ किए गए भोजन के बारे में बता सकता हूं। लेकिन मुझे लगता है कि आप मेरे उस भोजन के बारे में जानने को ज्यादा उत्सुक होंगे जो मैंने एक जादूगर के साथ किया था, क्योंकि ये अन्य दावतों से बिल्कुल अलग है। आमतौर पर लोग इस तरह का भोजन नहीं करते क्योंकि एक तो इंग्लैंड में ज्यादा जादूगर हैं ही नहीं और दूसरे, कि बहुत कम लोग ही जादूगरों से परिचित होते हैं। मैं एक असली जादूगर की बात कर रहा हूं।

कुछ बाज़ीगर अपने को जादूगर कहते हैं। वे बहुत चालाक होते हैं लेकिन वे उस तरह के काम नहीं कर सकते जैसे असली जादूगर करते हैं। मेरा कहने का मतलब यह है कि वे खरगोश को एक मछलियों के बरतन में बदल सकते हैं, लेकिन ऐसा वे किसी आड़ में या किसी चीज़ के नीचे करते हैं और आपको पता नहीं चल पाता कि वास्तव में क्या हो रहा है। लेकिन एक असली जादूगर आपकी आंखों के सामने ही एक गाय को दीवार-घड़ी में बदल सकता है। लेकिन यह मुश्किल काम है और कोई भी दिन में दो बार, हफ्ते में छः दिन यह नहीं कर पाएगा, जैसा कि बाज़ीगर खरगोश के साथ कर लेते हैं।

जब पहली बार मैं मिस्टर लीकी से मिला तो सोच भी नहीं सकता था कि वह जादूगर होंगे। हुआ यूं कि एक दिन शाम पांच बजे के करीब बाजार से लौटते हुए मैं एक बिजली के खम्बे के पास रुका, इसी बीच मेरे पीछे-पीछे चल रहा एक छोटा-सा आदमी आगे बढ़ गया। अचानक उसने एक बस को आते देखा और बचने के लिए वो पीछे की ओर कूदा लेकिन इसी चक्कर में वह एक कार के सामने आ गया। और अगर मैंने कोट का कॉलर पकड़ कर उसे वापस खींच नहीं लिया होता तो कार ने उसे टक्कर मार दी होती। क्योंकि बरसात का मौसम था और सड़क भीगी थी, ड्राइवर के ब्रेक लगाने पर भी कार रुकी नहीं, आगे की ओर थोड़ा-सा फिसल गई।

वह छोटा आदमी मेरा बहुत अहसानमंद हो रहा था। लेकिन इन घटनाओं से वह इतना घबरा गया था कि मैंने हाथ पकड़कर उसे सड़क पार कराई और उसे उसके घर तक पहुंचाया जो कि पास में ही था। अब मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि उसका घर कहां है क्योंकि हो सकता है कि आप जाकर उसको परेशान करें और अगर वह चिढ़ गया तो यह भी हो सकता है कि आपके लिए कोई परेशानी खड़ी हो जाए। मेरा मतलब है कि वह आपका एक कान, हाथी के कान के बराबर कर सकता है या आपके बाल हरे रंग के कर सकता है, या हो सकता है दाएं और बाएं पैर को आपस में बदल दे, या ऐसा ही कुछ और-और फिर ऐसे में आप जहां भी जाएंगे लोग आपका मजाक उड़ाएंगे।

उसने कहा, ''यह ट्रैफिक मुझे बिल्कुल पसंद

नहीं है, मोटर-बसों से तो मैं डर जाता हूं। अगर मेरा काम लंदन में नहीं होता तो मैं किसी ऐसे छोटे-से द्वीप पर रहता जहां सड़कें ही नहीं होतीं या फिर पहाड़ की चोटी पर रहता, नहीं तो एंसी ही किसी और जगह। उस छोटे आदमी को पूरा विश्वास था कि मैंने ही उसका जीवन बचाया है। इसलिए उसने आग्रह किया कि मैं उसके साथ रात का खाना खाऊं। मैंने कहा कि मैं बुधवार को खाने पर आऊंगा। उस समय तो मुझे उसके बारे में कुछ भी विचित्र नहीं लगा, सिवाय इसके कि उसके कान कुछ बड़े थे और दोनों कानों पर बालों का एक-एक गुच्छा था। मुझे याद है कि इस बारे में मैंने सोचा था अगर मेरे कान पर वैसे बाल होते तो मैं उन्हें काट देता। उसने बताया था कि उसका नाम लीकी है और वह पहली मंजिल पर रहता है।

खैर, मैं बुधवार को उसके घर पहंचा, सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर एक सामान्य से दिख रहे दरवाजे को खटखटाया। पहले वाला कमरा बिल्कुल साधारण था, लेकिन जब घर के अंदर पहुंचा तो दूसरा वाला कमरा बहुत ही विचित्र था, दीवारों पर सब तरफ परदे पड़े हुए थे। इन परदों पर आदमियों और जानव. रों के चित्र बने हुए थे। वहां एक तस्वीर टंगी थी जिसमें दो लोग एक मकान बनाते दिख रहे थे, इसी तरह दूसरे चित्र में एक आदमी कुत्ते को लिए हुए था और धनुष से खरगोशों का शिकार कर रहा था। जब मैंने इन तस्वीरों को छू कर देखा तो मालूम पड़ा कि ये कढ़ी हुई थीं। पर मज़ेदार बात यह थी कि ये तस्वीरें लगातार बदलती रहती थीं। जब तक आप देखते रहते तस्वीर स्थिर रहती। लेकिन इसी बीच अगर आप इधर-उधर देखने लगे और दुबारा उसी तस्वीर पर नजर डालें तो वह बदली हुई मिलती। खाना खाने के दौरान मकान बनाने वालों ने मकान की एक मंजिल और बना ली थी, शिकारी ने अपने धनुष से एक चिड़िया का शिकार कर लिया और कुत्ते ने दो खरगोश पकड़ लिए थे।

शुरू में तो मुझे समझ ही नहीं आया कि कमरे में रोशनी कहां से आ रही है। इसी बीच मैंने गमलों में लगे हुए कुछ पौधे देखे-रोशनी वहीं से आ रही थी। इतने विचित्र पौधे मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। उनमें टमाटर जितने बड़े लाल, पीले, नीले रंगों के चमकते हुए फल लगे थे। वे कोई नए प्रकार के बिजली के बल्ब नहीं थे। मैंने उनमें एक को छूकर देखा। वह बेहद ठंडा और फल की तरह मुलायम था।

हां, तो मिस्टर लीकी ने पूछा, 'आप क्या खाना पसंद करेंगे।' मैंने कहा, 'जो भी तैयार हो।' उसने कहा, 'आप जो भी पसंद करते हों बताएं, अच्छा ये बताइए कि कौन- सा सूप लेंगे?' मैंने कहा, 'बॉश, क्रीम डाल के (ये रूसी सूप है)।' मुझे लगा यह आदमी ज़रूर होटल से खाना मंगाता होगा।

'ठीक है, मैं तैयार कर लूंगा, उसने कहा, 'लेकिन अगर हमारा खाना उसी तरह परोसा जाए जिस तरह रोज परोसा जाता है तो आप बुरा तो नहीं मानेंगे? और हां, आप आसानी से डर तो नहीं जाते?'

मैंने कहा, 'बहुत आसानी से तो नहीं।' लीकी ने कहा, 'तो ठीक है। मैं अपने नौकर को बुलाता हूं, लेकिन आपको आगाह किए देता हूं कि वह बहुत बेढंगा है।'

यह कहते हुए उन्होंने अपने कानों को थपथपाया-लगा जैसे ताली बज रही हो। कोने में तांबे

का जो बड़ा-सा बर्तन रखा था उसमें से कुछ निकला। मुझे लगा कि एक बड़ा-सा सांप है। लेकिन यह ऑक्टोपस की एक भुजा थी। इस भुजा ने एक अलमारी खोली और एक बड़ा सा तौलिया निकाला, अब तक उसकी दूसरी भुजा भी बाहर आ चुकी थी जिसे उसने तौलिए से पोंछा। अब सूखी भुजा चूसकों की मदद से दीवार पर चिपक गई, और धीरे-धीरे पूरा जानवर बाहर आ गया। उसने अपने को सुखाया और दीवार पर रेंगने लगा।

इतना बड़ा ऑक्टोपस मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उसका शरीर एक बोरे के बराबर था और एक-एक भुजा करीब आठ फुट लंबी थी। वह दीवार के साथ रेंगता हुआ छत पर जा पहुंचा। जब वह मेज़ के ऊपर पहुंच गया तो एक भुजा से तो उसने छत को पकड़े रखा और बाकी की सात भुजाओं से अलमारी में से प्लेटें, कांटें, छुरियां आदि निकाल कर मेज़ पर सजा दीं।

मिस्टर लीकी ने बताया, 'यह मेरा नौकर ऑलिवर है। यह एक आदमी से कहीं बेहतर है, क्योंकि काम करने के लिए इसके बहुत से हाथ हैं और एक प्लेट को लगभग दस चूसकों से उठाता है इसलिए वह कभी गिर कर टूट नहीं सकती।'

मेज़ लगाने के बाद ऑलिवर ने सात अलग-अलग तरह के पेय-पदार्थ पेश किए। पानी, नींबू शर्बत, बियर और चार किस्म की वाइन। उसके साथ हाथों में सात तरह की बोतलें थीं। मैंने पानी लिया।

यह सब कुछ इतना विचित्र था कि इस बात की तरफ मेरा ध्यान ही नहीं गया कि मेरे मेज़बान से बड़ा-सा हैट पहन रखा है, लेकिन जब उन्होंने उसे सिर से उतारा और उसमें से दो प्लेटों में सूप उड़ेला तो मैं चकित रह गया।

'अरे! हमें थोड़ी-सी क्रीम भी चाहिए,'
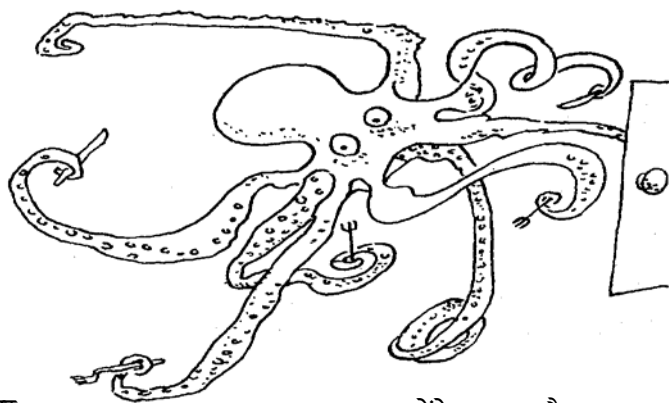
उन्होंने कहा और आवाज दी, 'फिलिस आओ,' और खरगोश के घर जैसे एक डिब्बे में से एक छोटी-सी हरे रंग की गाय भागती हुई आई और कूदकर मेज़ पर चढ़ गई और उनके सामने खड़ी हो गई। ऑलिवर ने उन्हें एक जग दिया और मि० लीकी ने दूध दूहने की तरह उस गाय में से क्रीम दुह कर निकाली। क्रीम बहुत ही बढ़िया थी, मुझे सूप भी बहुत पसंद आया।

'अब आप क्या लेंगे?' मि० लीकी ने पूछा। 'जो आप चाहें,' मैंने उत्तर दिया। वे बोले, 'ठीक है हम भुनी हुई मछली लेंगे और उसके बाद टर्की (एक तरह का पक्षी)। ऑलिवर एक मछली पकड़ो और पॉम्पी उसे भूनो,' उन्होंने कहा। ऑलिवर ने मछली पकड़ने का कांटा निकाला और उसे मछली पकड़ने के अंदाज में अपने एक हाथ से हिलाने लगा। तभी मैंने अलाव में कुछ शोर-सा सुना और देखा कि उसमें से पॉम्पी बाहर आ रहा है। पॉम्पी एक छोटा-सा ड्रेगन था, करीब एक फुट लंबा और एक फुट की ही उसकी दुम थी। अलाव से बाहर निकलने से पहले वह दहकते कोयलों पर लेटा हुआ था इसलिए लाल सुर्ख हो रहा था। मुझे यह देखकर बड़ा मजा आया कि पॉम्पी ने बाहर आकर वहां रखे ऐसबेस्टॉस के छोटे-छोटे जूते पहन लिए।

मि० लीकी ने कहा, 'पॉम्पी अपनी दुम

ठीक से ऊपर उठा लो, अगर तुमने फिर से कालीन जलाया तो मैं एक बाल्टी ठंडा पानी तुम्हारे ऊपर उड़ेल दूंगा।' साथ ही बहुत ही धीमें से यह भी कहा, 'मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा क्योंकि एक छोटे-से ड्रेगन पर ठंडा पानी डालना बहुत क्रूर काम है।' इसे सिर्फ मैं ही सुन सका। लेकिन बेचारा पॉम्पी-उसने इस धमकी को गंभीरता से लिया, उसकी नाक से निकलेवाली पीली लपटें हल्की नीली हो गई, उसने दुम को उपर उठा लिया और पीछे के पैरों पर धीरे-धीरे चलने लगा। मुझे लगा कि जूतों की वजह से उसे चलने में दिक्कत हो रही है, लेकिन उसकी वजह से कालीन बच गया था। ड्रेगन चारों पैरों पर ही चलते हैं और कभी जूते नहीं पहनते, इसलिए पॉम्पी को इस तरह चलते देखकर मुझे बड़ा ताज्जुब हो रहा था। मैं पॉम्पी में ही इतना मगन हो चुका था कि देख ही नहीं पाया कि ऑलिवर ने मछली कैसे पकड़ी। और जब मैंने दुबारा ऑलीवर की ओर देखा तब तक वह मछली को साफ कर चुका था, इसके बाद मछली को उसने पॉम्पी की ओर फेंका। पॉम्पी ने आगे के पंजों से उसे पकड़ा, फिर बारी-बारी से दोनों हाथों में लेने लगा। उसके हाथों में पंजे जैसी लंबी-लंबी पतली अंगुलियां थीं। जब उसके हाथ में मछली होती तो वह दूसरे हाथ को सीने पर रखकर गर्म करता था। जब मछली भुन गई तो पॉम्पी ने उसे ऑलिवर की दी हुई प्लेट में रख दिया। अब तक पॉम्पी को ठंड लगने लगी थी और उसके दांत बज रहे थे। मछली रखते ही वह लपक कर अलाव में चला गया।

मि0 लीकी ने कहा 'अगर ड्रेगन का मेरे लिए कोई उपयोग नहीं होता तो मैं उसे रख ही नहीं सकता था। पिछले सप्ताह मैंने इसकी सांस की सहायता से, दरवाजों का पुराना पेन्ट जलाया। इसकी दुम टांका लगाने का काम भी देती है, और फिर चोर डाकुओं के मामले में तो यह कुत्ते से भी ज्यादा भरोसेमंद है। कुत्ते को तो चोर गोली मार सकते हैं-लेकिन गोली जैसे ही पॉम्पी को छुएगी पिघल जाएगी। मैं तो सोचता हूं कि ड्रेगन सिर्फ सजाने के लिए नहीं है, उनका उपयोग भी करना चाहिए। तुम क्या सोचते हो?'

मैंने कहा, 'मुझे तो बताते हुए भी शर्म आ रही है कि मैं पहली बार किसी जीवित ड्रेगन को देख रहा हूं।'

मि. लीकी बोले, 'मैं भी कैसा बुद्धू हूं, ये तो भूल गया था कि अधिकतर तो मेरे पास इस पेशे से जुडे हुए लोग ही आते हैं और तुम एक सामान्य व्यक्ति हो।' इसी बीच उन्होंने अपने हैट में से चटनी, मछली पर उड़ेली, साथ ही बोलते भी गए, 'मैं नहीं कह सकता कि तुमने इस भोजन में कोई विचित्र बात देखी है या नहीं। वैसे कुछ लोगों की निरीक्षण करने की शक्ति दूसरों से ज्यादा होती है।'

मैंने जवाब दिया, 'ऐसी चीज़ मैंने पहले कभी नहीं देखी।' इस वक्त भी मैं एक इन्द्रधनुषी गुबरैले को देख रहा था जो कमर पर नमक दानी बांधे मेरी तरफ आ रहा था।

मेरे मेजबान ने कहा- ठीक है, वैसे अब तक तो आप समझ ही गए होंगे कि मैं जादूगर हूं। पॉम्पी तो असली ड्रेगन है लेकिन बाकी जो दूसरे जानवर हैं, ये सब आदमी थे। मैंने ही उन्हें ऐसा बना दिया। मिसाल के तौर पर ऑलिवर एक आदमी था। उसके पैर एक ट्रेन से कट गए थे। मेरा जादू मशीनों पर नहीं चलता इसलिए मैं उसके पैर नहीं

जोड़ सकता था। और खून बहने से वह मर जाता, इसलिए मैंने सोचा कि इसकी जान बचाने का सिर्फ एक ही तरीका है कि इसे ऐसे जानवर में बदल दिया जाए जिसके पैर न हों। इसलिए इसे एक घोंघा बना दिया और जेब में रखकर घर आ गया।

शुरुआत में तो मैंने इसे कुत्ता आदि जैसे दूसरे जानवरों में बदलना चाहा लेकिन उसके पीछे के पैर गायब होते। ऑक्टोपस के पैर नहीं होते, आठों भुजाएं उसके सिर से निकलती हैं, इसलिए जब इसे ऑक्टोपस बनाया तो वह ठीक हो गया। यह पहले वेटर रह चुका था इसलिए यहां भी जल्दी ही अपने काम में दक्ष हो गया। मुझे लगता है कि यह नौकर से कहीं बेहतर है। एक तो यह ऊपर से ही प्लेटें उठा लेता है, दूसरे पीछे खड़े होकर सिर पर सवार नहीं रहता। 'ऑलिवर तुम बची हुई बाकी मछली और एक बोतल बियर ले लेना- मैं तुम्हारी पसन्द जानता हूं।' वह बोले।

ऑलिवर ने एक हाथ से मछली को पकड़कर एक बड़ी-सी चोंच में रख लिया। यह चोंच थी तो तोते जैसी-पर आकार में उससे बहुत बड़ी। यह उसकी आठों भुजाओं के बीच में थी। उसने अलमारी में से एक बियर की बोतल निकाली और चोंच से ढक्कन खोला, फिर अपनी दो भुजाओं की मदद से वह छत पर इस तरह घूम गया कि मुंह से लगी बोतल ऊपर की ओर हो जाए। इस तरह बियर पीने के दौरान ही उसने अपनी बड़ी-सी आंख को झपकाया भी। अब मैं निश्चित हो गया कि ऑलिवर सही में आदमी रहा होगा क्योंकि किसी ऑक्टोपस को पलक झपकाते मैंने पहले कभी नहीं देखा था। बाकी सभी व्यंजनों के मुकाबले टर्की कुछ सीधे तरीके से आया लेकिन इसके तुरन्त बाद उस शाम का हादसा हो गया। वह जो गुबरैला नमकदानी लिए आ रहा था, मेज़पोश की एक सलवट पर लुढ़क गया और सारा नमक बिल्कुल मिस्टर लीकी के सामने ही गिर गया।

उन्होंने गुस्से से उसे डांटा 'लियोपोल्ड, तुम्हारी खुशकिस्मती है कि मैं एक समझदार आदमी हूं। अगर अंधविश्वासी होता तो सोचता कि यह मेरे लिए अपशकुन का संकेत है। लेकिन अब तुम्हारा दुर्भाग्य आने वाला है। मैं तो सोच रहा था कि तुम्हें फिर से आदमी बना दूंगा लेकिन अगर मैंने तुम्हें आदमी बनाया तो सीधे पुलिस स्टेशन भेज दूंगा। वहां पुलिस वाले तुमसे पूछेंगे कि तुम अब तक कहां छिपे थे? तुम क्या समझते हो कि वे विश्वास कर ले. गे-जब तुम बताओगे कि तुम एक गुबरैला बने हुए थे? क्या तुम्हें अपनी इस हरकत का अफसोस है?'

बहुत मुश्किल से लियोपोल्ड अपने बंधन से निकला और अपनी कमर पर घूम कर अपने पैर हवा में ऐसे हिलाने लगा जैसा कि एक कुत्ता शर्म आने पर करता है।

मिस्टर लीकी ने मुझे बताया कि जब लियोपोल्ड आदमी था तो लोगों को धोखा देकर पैसा बनाया करता था। जब पुलिस को खबर मिली और वे इसे गिफ्तार करने आ रहे थे तब यह मदद मांगने मेरे पास आया। मैंने इसे बताया कि अगर पुलिस तुम्हें पकड़ लेती है तो सीधे सात साल

की सज़ा होगी। लेकिन तुम चाहो तो पांच साल के लिए मैं तुम्हें एक गुबरैला बना सकता हूं। इस बीच अगर तुम्हारा व्यवहार अच्छा रहा तो तुम्हारी शक्ल बदल कर तुम्हें आदमी बना दूंगा, जिससे कोई तुम्हें पहचान नहीं सकेगा। इसलिए लियोपोल्ड आज गुबरैला है। लगता है लियोपोल्ड को नमक गिराने का अफसोस है। 'लियोपोल्ड तुमने जो नमक गिराया है, सारा-का-सारा उठाओ।'

जब हम टर्की खत्म कर रहे थे उसी दौरान मि0 लीकी बेचैनी से बार-बार ऊपर की ओर देख रहे थे। उन्होंने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि अब्दुल मक्कर स्ट्रॉबेरियां लाने में देरी नहीं करेगा।' 'स्ट्राबेरियां। और वह भी जनवरी में।' मैंने आश्चर्य से कहा। मि0 लीकी ने कहा, हां, अब्दुल मक्कर एक जिन्न है और उसे मैंने स्ट्रॉबेरियां लाने न्यूज़ीलेंड भेजा है, वहां इस समय गर्मी का मौसम होगा। उसे ज्यादा देर नहीं करनी चाहिए। लेकिन हम लोगों की तरह जिन्नों की भी कमजोरियां होती हैं। जब उन्हें किसी काम के लिए भेजा जाता है तो वे बहुत ऊंचाई पर उड़ते हुए जाते हैं। वे जन्नत के इतना नज़दीक जाना चाहते हैं कि फरिश्तों की बातें सुन सकें, और तब फरिश्ते उन पर अग्नि बाण फेंकते हैं। और होता यह है कि वे अपना सामान गिरा देते हैं या आधे झुलसे हुए घर वापस आते हैं। अब्दुल मक्कर को गए एक घंटे से अधिक बीत चुका है। उसे जल्दी ही वापस आना चाहिए, चलिए इस बीच हम कोई और फल ले लेते हैं।'

मि0 लीकी उठे और मेज़ के चारों कोनों को उन्होंने अपनी छड़ी से छुआ। हर कोने की लकड़ी फूल गई, और फिर चटक गई। उसमें से छोटा सा एक हरा अंकुर निकला और तेजी से बड़ा होने लगा। सिर्फ एक मिनट में पौधे एक फुट ऊंचे हो गए, उनका तना मोटा हो गया और उनमें काफी सारी पत्तियां आ गईं। पत्तियों को देखकर मैं बता सकता था कि एक पेड़ चेरी का है, दूसरा आडू का और तीसरा नाशपाती का। लेकिन चौथे को मैं नहीं पहचान सका।

इसी दौरान जबकि ऑलिवर अपने चार हाथों से मेज़ साफ कर रहा था और पांचवें से एक व्यंजन खा रहा था- तभी अब्दुल मक्कर अंदर आया। वो छत में से दाखिल हुआ। पहले उसके पैर आए और लगा जैसे छत बन्द हो गई है। फिर छत थोड़ी सी हिली और वो ऑलिवर की भुजा से टकराते-टकराते बचता हुआ फर्श पर आ खड़ा हुआ। उसने मिस्टर लीकी को प्रमाण किया और कहा, 'आपका गुलाम आपके लिए दुर्लभ ताज़े फल लाया है।'

उसका रंग भूरा था, नाक कुछ लंबी थी। वह काफी कुछ आदमी जैसा लग रहा था, सिवाय इसके कि उसके नाखून सुनहले थे और पीठ पर उड़ने वाले पंख थे। उसने रेशमी कपड़े पहन रखे थे जिनका रंग हरा था।

मि0 लीकी ने जवाब दिया, 'मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूं। अब तुम जा सकते हो। लेकिन ठहरो, पहले मेरे लिए मॉन्ट्रियल से ब्लेड ला दो। लंदन में अब तक दुकाने बंद हो चुकी हैं लेकिन मॉन्ट्रियल में तो अभी दोपहर ही होगी।' अब्दुल मक्कर ने कहा, 'हुज़ूर नीचे आकाश हवाई जहाज़ों से भरा हुआ है जो जादुई कालीन से भी तेज उड़ते हैं और ऊपर की ओर बहुत से
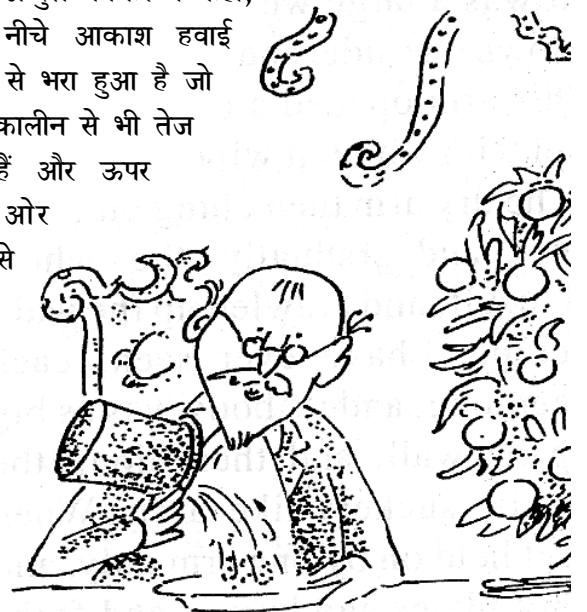
आकाशीय पिंड तैर रहे होंगे।' मि0 लीकी ने कहा, 'तो तुम पांच मील की ऊंचाई पर उड़ कर जाना और दोनों खतरों से बचना। अब तुम जाओ।'

जिन्न गायब हो गया। उसने इस बार फर्श से जाना बेहतर समझा। इसी बीच पेड़ चार फीट ऊंचे हो गए थे। उन में फूल भी लग गए थे, फूल झड़ रहे थे और छोटे-छोटे हरे फल लगने लगे थे।

मि0 लीकी ने कहा-अब्दुल मक्कर से मैंने तुम्हारा परिचय नहीं कराया। आशा है तुमने बुरा नहीं माना होगा। बात यह है कि जिन्न कभी-कभी बड़े बेढंगे हो जाते हैं। हालांकि अब्दुल मक्कर अच्छा जिन्न है फिर भी अगर तुम उसे वापस भेजने का मंत्र नहीं जानते हो तो वह तुम्हारे लिए बड़ी विचित्र स्थिति पैदा कर सकता है, जैसे कि अगर तुम क्रिकेट खेल रहे हो और तुम्हारे विरुद्ध कोई तेज गेंदबाज है तो अब्दुल मक्कर तुमसे पूछ सकता है कि क्या मैं तुम्हारे दुश्मन हो मार दूं या उसे बकरा बना दूं? मुझे क्रिकेट देखने का बड़ा शौक था। पिछले साल मैं एक मैच देख रहा था-ऑस्ट्रेलिया और ग्लूचेस्टर के बीच। ग्लूचेस्टर की टीम के साथ मेरी थोड़ी-सी हमदर्दी हो गई और दूसरी टीम के ि खलाड़ी धड़ाधड़ एक के बाद एक आउट होने लगे। मैं फौरन वहां से उठकर चला नहीं जाता तो उस टीम की हार निश्चित थी। उसके बाद मैं कभी मैच देखने नहीं गया। आखिर सभी चाहते हैं न कि जो अच्छा खेले वही जीते।

फिर हमने नयूजीलैंड की स्ट्राबेरी खाई जो बहुत बढ़िया थीं। तब तक मेज पर उगे पेड़ों में लगे फल पक चुके थे। चौथे पेड़ पर खुमानी की शक्ल के, पर उससे काफी बड़े छः सुनहरे फल लगे थे। मि0 लीकी ने बताया ये आम हैं जो भारत में पैदा होते हैं, इन्हें इंग्लैंड में नहीं उगाया जा सकता, सिवाय जादू से। मैंने कहा कि मैं आम खाऊंगा। मि0 लीकी ने कहा कि अमीर-से-अमीर आदमी भी इस बात में मेरी बराबरी नहीं कर सकते। वे हवाई जहाज से आम तो मंगा सकते हैं लेकिन किसी पार्टी में आम खिला नहीं सकते।

मैंने पूछा, 'ऐसा क्यों?'

लीकी ने कहा, 'लगता है कि तुमने आम कभी खाया नहीं है। आम खाने की सही जगह गुसलखाना है। ऊपर तो आम पर मजबूत छिलका होता है लेकिन अन्दर मुलायम गूदा। इसलिए जब तुम इसे खाओगे तो रस चारों तरफ से टपकेगा और तुम्हारे सफेद कपड़े खराब हो जाएंगे। लेकिन तुम यह आम मजे-से खा सकते हो। मगर जरा ठहरो मैं इस पर मंत्र फूंक दूं, फिर इसका रस तुम्हारे ऊपर नहीं टपकेगा।'

मि0 लीकी ने अपनी छड़ी घुमाई और इसके बाद मैंने अपना आम खाया। आम बहुत बढ़िया था। यह ही एक ऐसा फल था जो सबसे बढ़िया स्ट्राबेरियों से भी अच्छा था। उसकी खुशबू का तो बखान ही नहीं कर सकता। बीच में सख्त गुठली थी और उसके चारों ओर पीला गूदा। जादू का असर देखने के लिए मैंने थोड़ा-सा गूदा अपने कोट पर डाला लेकिन वो उछल कर मेरे मुंह में आ गया। मि0 लीकी ने एक नाशपाती खाई और बाकी पांच आम मुझे घर ले जाने के लिए दे दिए। और उन्हें मुझे अपने गुसलखाने में ही खाना पड़ा क्योंकि इन पर मंत्र नहीं फूंका

गया था।

थोड़ी देर तक हम कुत्तों, फुटबाल, जादू आदि के बारे में बातें करते रहे। फिर मैंने उनसे कहा कि अब मुझे घर जाना चाहिए।

मि0 लीकी ने कहा, 'मैं तुम्हें घर पहुंचा दूंगा, मगर जब भी तुम्हें दिनभर की फुर्सत मिले मेरे साथ समय बिताने आना। अगर तुम यह देखना चाहो कि मैं आमतौर पर क्या करता हूं तो हम दोपहर में भारत या जावा जा सकते हैं। मुझे बता देना कि तुम्हें किस दिन समय मिलेगा। अब तुम इस कालीन पर खड़े हो जाओ और अपनी आंखें बंद कर लो।'

हम कालीन पर खड़े हो गए और मैंने आखिरी बार मेज़ की ओर देखा। लियोपोल्ड ने सारा नमक उठा दिया था और अब वो सुस्ता रहा था, फिलिस जुगाली कर रही थी, फिर मैंने अपनी आंखें बंद कर ली। मि0 लीकी ने कालीन को मेरा पता बताया और अपने कान थपथपाए। मैंने अपने चेहरे पर ठंडी हवा का झोंका महसूस किया। मेरा दिल भी थोड़ा-थोड़ा घबड़ा रहा था। अब हवा फिर से गर्म हो गई थी और मि0 लीकी ने मुझसे आंखें खोलने को कहा। मैं अपने घर की बैठक में था-मिस्टर लीकी के मकान से पांच मील दूर।

मेरा कमरा छोटा था और फर्श पर किताबें आदि बिखरी हुई थीं। कालीन के लिए पूरी जगह नहीं थी इसलिए वो ज़मीन से करीब एक फीट ऊपर हवा में ही ठहर गया था। नीचे उतरकर मैंने बत्ती जलाई।

मि0 लीकी ने मुझसे हाथ मिलाया और कहा, 'शुभ रात्रि।' इसके बाद उन्होंने अपना कान थपथपाया और कालीन के साथ ही वे भी गायब हो गए।

मैं अपने कमरे में अकेला था- आमों के साथ- जो मुझे बता रहे थे कि मैं सपना नहीं देख रहा था। मुझे उम्मीद है कि मेरे दोस्त मिस्टर लीकी तुम्हें एक बढ़िया आदमी लगे होंगे।
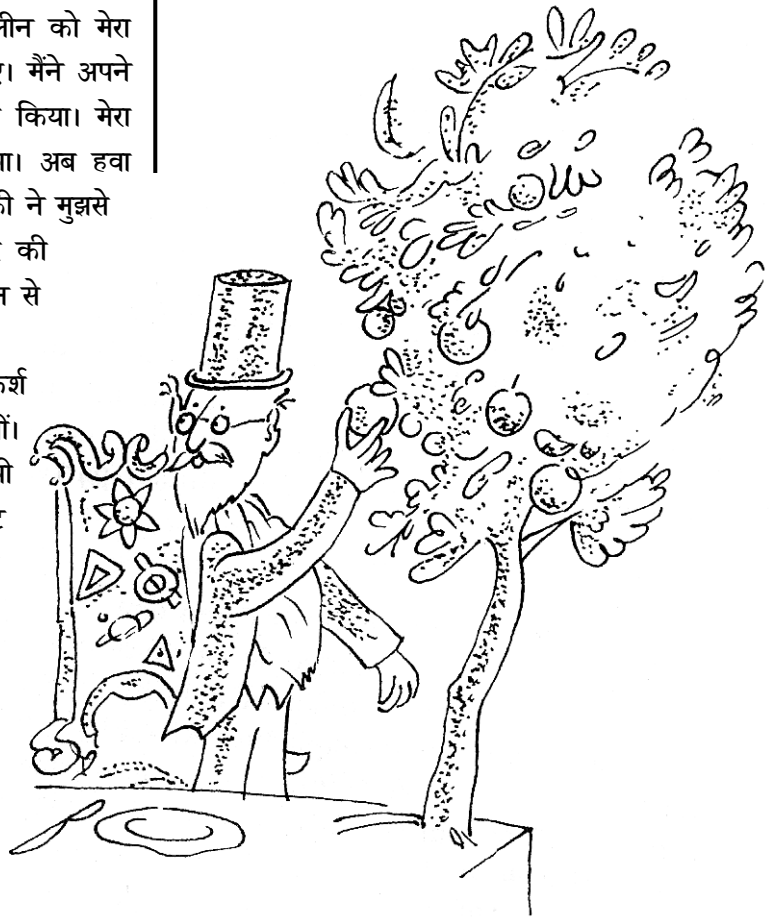
दिमागी दौड़

1. कौन सी चीज़ ठण्डी होने पर भाप छोड़ती है?
2. वह कौन है जिसे आंखें बन्द करके ही देखा जा सकता है?
3. वह कौन सा शब्द है जिसे हर आदमी गलत बोलता है?
4. वह कौन सी चीज़ है जिसके पैदा होने पर दुःख तथा समाप्त हाने पर प्रसन्नता होती है?
5. वह कौन सा फल है जो साल में एक बार निकलता है?
6. राहुल दिन भर खेलकर थक गया। सवेरे देर से उठने के इरादे से खड़ी में आठ बजे का अलार्म भरकर सो गया। जिस समय वह सोया उस समय रात के सात बजे थे। बताइए जब घड़ी में अलार्म बजेगा तो राहुल कितने घंटे सो चुका होगा?
7. वह कौन सा खेल है, जिसमें हारने वाली टीम पीछे हटने के बजाय आगे को बढ़ती है?
8. सतर में क्या जोड़ें कि सतरह हो जायें?
9. किस महीने में लोग सबसे कम खाते हैं?
10. वह कौन-सी कली है, जो न दिन में खिलती है, न रात में?
11. स्कूटर में वे साढ़े तीन है, जबकि कार में दो ही। वे कौन हैं?
12. बीच में मांस व हड्डी तो है ही, खून भी गुजरता है, लेकिन वह है फिर भी निर्जीव। कौन है वह?
13. व्यक्ति की वह कौन-सी चीज है, जिसका प्रयोग वह पूरे दिन में शायद एक -दो बार ही करता है, जबकि अन्य अनेक बार, कौन है वह?
14. पूरे दिन भी मिलती हैं, पर क्षण भर के बाद में ही अलग-अलग हो जाती हैं। लेकिन जब रात में मिलती हैं, तो सुबह तक अलग नहीं हो पातीं। कौन हैं वे?
15. इसे लेना भी जरूरी है, पर साथ ही छोड़ना भी पड़ता है। क्या है?

उत्तर इसी अंक में कहीं

रंग बिरंगे बदलाव

ये लो।
तुमने कर डाला।
तुमने अभी-अभी एक बदलाव किया।
ये पन्ना बंद था, लेकिन अब यह खुल चुका है।

हर चीज़ बदलती है।

जवान लोग बूढ़े होते हैं। दिन रात में बदल जाते हैं। छोटे बाल बड़े हो जाते हैं।

कुछ चीजें एकाएक बदल जाती हैं।

जैसे मक्के का दाना फटाक से फूटकर पॉपकार्न बन जाता है।
या बादल फटना जो एकाएक सबको ऊपर से नीचे तक भिगो देता है,
या एक लैम्प जो किसी कमरे से अंधेरे को भगाकर उजाला ला देता है।

कुछ बदलाव धीमे होते हैं

जैसे कोई पेड़ हर दिन थोड़ा थोड़ा बढ़ता है।
या जैसे एक बर्फ का टुकड़ा कोल्ड ड्रिंक में धीरे-धीरे पिघलता है, या उस घड़ी के कांटों की तरह जो बेहद धीमे चलते हैं जब तुम स्कूल में इंटरवल का इंतजार करते हो।

कुछ बदलाव खुशनुमा और मज़ेदार होते हैं

वसन्त के दिन की तरह जब हरी-हरी कोंपलें दिखाई पड़ती हैं, या रेस की शुरुआत की तरह जब सभी धावक दौड़ पड़ते हैं या जब तुम छुट्टी मनाने को घूमने जाने के लिए घर छोड़ते हो।

कुछ बदलाव डरावने होते हैं

जैसे आग लगने के बाद गिरता कोई घर
या किसी कार का अचानक चीखते हुए रुक जाना
या धरती को हिला डालने वाले भूकम्प का आना।

कुछ बदलाव जो थोड़े मज़ेदार भी होते हैं और थोड़े डरावने भी

जैसे नये स्कूल में पहला दिन
या घूमने वाले झूले में झूलना, या तैरना या साइकिल चलाना सीखना।

चीजें कैसे बदलती हैं

बदलाव तभी आता है
जब कोई इसे लाता

है-कोई अंदरूनी ताकत या बाहर से धक्का देना या खींचना, पकड़ना या जाने देना, 'हां' या 'ना' कहना।

एक मजबूत पेड़ वर्षों तक खड़ा रहता है, जब तक कि उस पर बिजली न गिरे या तेज़ हवा उसे गिरा न दे। ट्रैफिक चलता रहता है जब तक कि लाल बत्ती उसे रोक नहीं देती।

हम पानी पीते जाते हैं जब तक कि हमारी प्यास खत्म न हो जाये।

बदलाव दो उल्टी ताकतों के बीच की रस्साकशी जैसा होता है। किसी चीज़ में बदलाव के लिए जरूरी होता है कि एक ताकत दूसरी ताकत से ज्यादा ताकतवर हो जाए।

जब कोई दरवाजा फंसा होता है तो तुम्हें ज्यादा जोर से उसे धक्का देना या खींचना पड़ता है।

एक लिफ्ट को ढेर सारे लोगों को एक साथ ऊपर-नीचे ले जाने के लिए खूब ज्यादा ताकतवर होना पड़ता है।

कभी-कभी तुम्हें किसी को अपनी बात मनवाने के लिए काफी बहस करनी पड़ती है।

एक ताकत आमतौर पर दूसरी ताकत से ज्यादा ताकतवर, ज्यादा महत्वपूर्ण और ज्यादा आसानी से देखी जा सकने वाली होती है।

जब एक टीम जीत रही होती है, तो उस वक्त वह ज्यादा ताकतवर ताकत है।

जब तुम्हारा शरीर कीटाणुओं से ज्यादा ताकतवर होता है तब तुम स्वस्थ महसूस करते हो।

जब कोई ज्वालामुखी फूट रहा होता है तो वह इतना शक्तिशाली होता है कि एक पहाड़ भी उसे नहीं रोक पाता।

बदलाव धीरे-धीरे और छोटे-छोटे कदमों में शुरू होते हैं, जिसमें एक पक्ष दूसरे पक्ष से रस्साकशी कर रहा होता है।

हम कोई गुब्बारा फुलाते हैं और वह बड़ा होता जाता है।

गिरने वाला दूध का दांत दिन-पर-दिन ढीला होता जाता है।

हमारा कमरा शुरू में तो साफ-सुथरा रहता है, लेकिन समय के साथ अस्त-व्यस्त होता जाता हैं।

एक ठण्डा मक्के का दाना पकाने पर गरम होता जाता है।

बदलाव का क्षण

एक वक्त पर बदलाव का क्षण आता है जब गुब्बारा बहुत बड़ा हो जाता है तो यह फूट जाता है।

जब नया दांत बाहर आने को ज्यादा जोर मारता है तो दूध का दांत गिर जाता है।

एक वक्त आता है जब तुम्हारा कमरा इतना अस्त-व्यस्त हो जाता है कि तुम इसे साफ-सुथरा बनाने का फैसला करते हो।

जब मक्के के दाने के भीतर की पानी की बूंद भाप बन जाती है तो वह एकाएक फूटकर पॉपकार्न बन जाता है।

गुब्बारा फूटने और पॉपकार्न बनने जैसे कुछ बदलाव के क्षणों को आसानी से देखा जा सकता है।

जब माचिस की डिब्बी पर तीली को मारते हैं तो तीली जल जाती है।
जब साने से हमारे शरीर को आराम मिल जाता है तब हम जाग जाते हैं।
जब अण्डे के भीतर चूज़ा तैयार हो जाता है तो वह उसे तोड़कर बाहर आ जाता है।
दूसरे बदलाव के क्षणों को देख पाना मुश्किल होता है, मगर फिर भी वे होते हैं।
जैसे बच्चे हर दिन थोड़ा-थोड़ा बड़े होते जाते हैं- और एक दिन वे जवान हो जाते हैं।
सैंकड़ों सालों में बारिश और हवा पहाड़ों को मिट्टी के ढेर में बदल देती हैं।
दिन-पर-दिन सर्दियां गर्मियों में, गर्मियां बरसातों में और बरसात सर्दियों में बदल जाते हैं।

कुछ बदलाव के क्षण अन्त को दिखलाते हैं

जैसे एक सड़क जो अपने छोर तक पहुंच जाती है। या दिन की समाप्ति पर बिस्तर में जाकर सो जाना। या गर्मी की छुट्टी से पहले स्कूल का आखिरी दिन।

कुछ अन्त खुशनुमा होते हैं

जैसे शादी के सामारोह के अन्त में दूल्हा-दुल्हन द्वारा एक दूसरे को माला पहनाना। या वह आखिरी रन जिस पर आपकी टीम जीत जाती है।

कुछ अंत दुखमय होते हैं

जैसे मोटरसाइकिल से गिर पड़ना या नई जगह पर जाते समय पुराने दोस्तों को अलविदा कहना।
लेकिन चूंकि बदलाव कभी नहीं रुकते, इसलिए हर अंत भी एक नई शुरुआत होती है। जैसे मोटरसाइकिल से गिरने के बाद तुम फिर उस पर चढ़कर उसे चला सकते हो। या जैसे नई जगह पर जाने के बाद भी तुम चिट्ठी और ई-मेल के जरिए पुराने दोस्तों से सम्पर्क बनाये रख सकते हो।

बदलाव और कुण्डल

बदलाव कुण्डलाकार रास्ते से होते हैं। ऐसा लगता है कि हम जहां से चले गए थे वहीं पहुंच गये हैं, लेकिन ऐसा नहीं होता।
जैसे चक्करदार सीढ़ी जो गोल-गोल ऊपर चढ़ती है, लेकिन हर बार आप ऊपर पहुंच चुके होते हैं। जैसे हर रोज़ स्कूल जाना और आना, लेकिन हर बार कोई नई चीज़ सीखकर।
या मौसम का आना-जाना, लेकिन हर बार समय आगे बढ़ चुका होता है।

बदलाव लाना

अब तुम जानते हो कि बदलाव कैसे होते हैं। लेकिन क्या तुम जानते हो कि तुममें इतनी ताकत है कि तुम हर तरह के बदलाव कर सकते हो?

कुछ बदलाव आसान होते हैं

जैसे अगर तुम्हें टी0 वी0 पर कोई कार्यक्रम

अच्छा नहीं लग रहा तो तुम चैनल बदल सकते हो, या टी0वी0 बंद कर सकते हो। अगर तुम्हें हेयर स्टाइल पसन्द नहीं तो तुम अगली बार अपने तरीके से बाल कटवा सकते हो।

कुछ बदलाव थोड़ा ज्यादा प्रयास की मांग करते हैं।

जैसे अगर तुम पियानो बजाना सीखना चाहते हो तो तुम्हें उसके बारे में अध्ययन करना पड़ेगा, अभ्यास करके सीखना पड़ेगा।

अगर तुम शर्मीले हो या तुम्हारा कोई दोस्त नहीं है, तो अपने जैसी पसंद रखने वाले बच्चों से मिल सकते हो। अगर तुम्हारा व्यवहार किसी से बुरा रहा हो, तो तुम उनसे माफी मांग सकते हो।

अगर किसी और का व्यवहार तुमसे अच्छा न रहा हो तो तुम उसे माफ कर सकते हो। हमारी दुनिया में अगर तुम दूसरे लोगों के साथ काम करो, तो तुम कई बदलाव लाने में सहायक हो सकते हो। हम अपने आस-पास की जगह साफ रखकर बीमारियों से बच सकते हैं।

अगर हम सब साथ मिलकर काम करें तो हम बड़े से बड़ा बदलाव ला सकते हैं। हम गरीबी को समृद्धि में बदल सकते हैं। बीमारी को अच्छे स्वास्थ्य में बदल सकते हैं। युद्ध को शान्ति में बदल सकते है। अशिक्षा को ज्ञान में बदल सकते हैं। अब तुम एक और बदलाव के क्षण पर पहुंच गये हो, और वह है इस लेख के अन्त का क्षण। क्या लेख को पढ़ने से तुम्हारे अंदर कोई बदलाव आया?
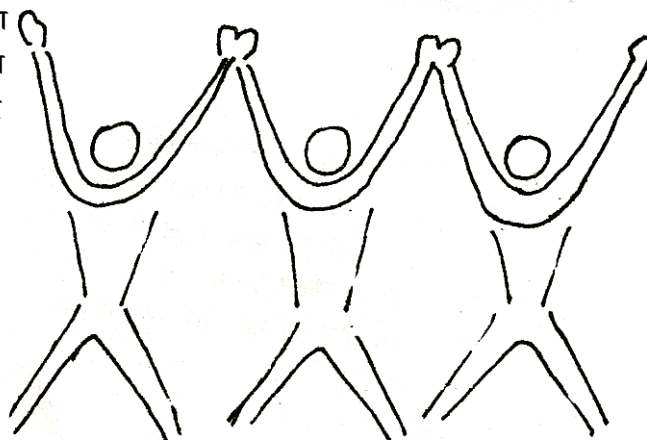
ओछे साथी

– अभिनंद

फुनगी के पंछी दूर कहीं उड गये।
बन्दरों ने फल तो फेंक दिये
और अलग खडे देखते रहे।
छाया में बैठे बटोही की थकान मिट चुकी थी,
उसने हट कर अपना बचाव किया।

जब पेड पर कुल्हाडी चली
तो सारे-के-सारे ओछे निकले-
किसी ने साथ नहीं दिया!

संस्कृत से अनुवाद:
विजयदान देथा
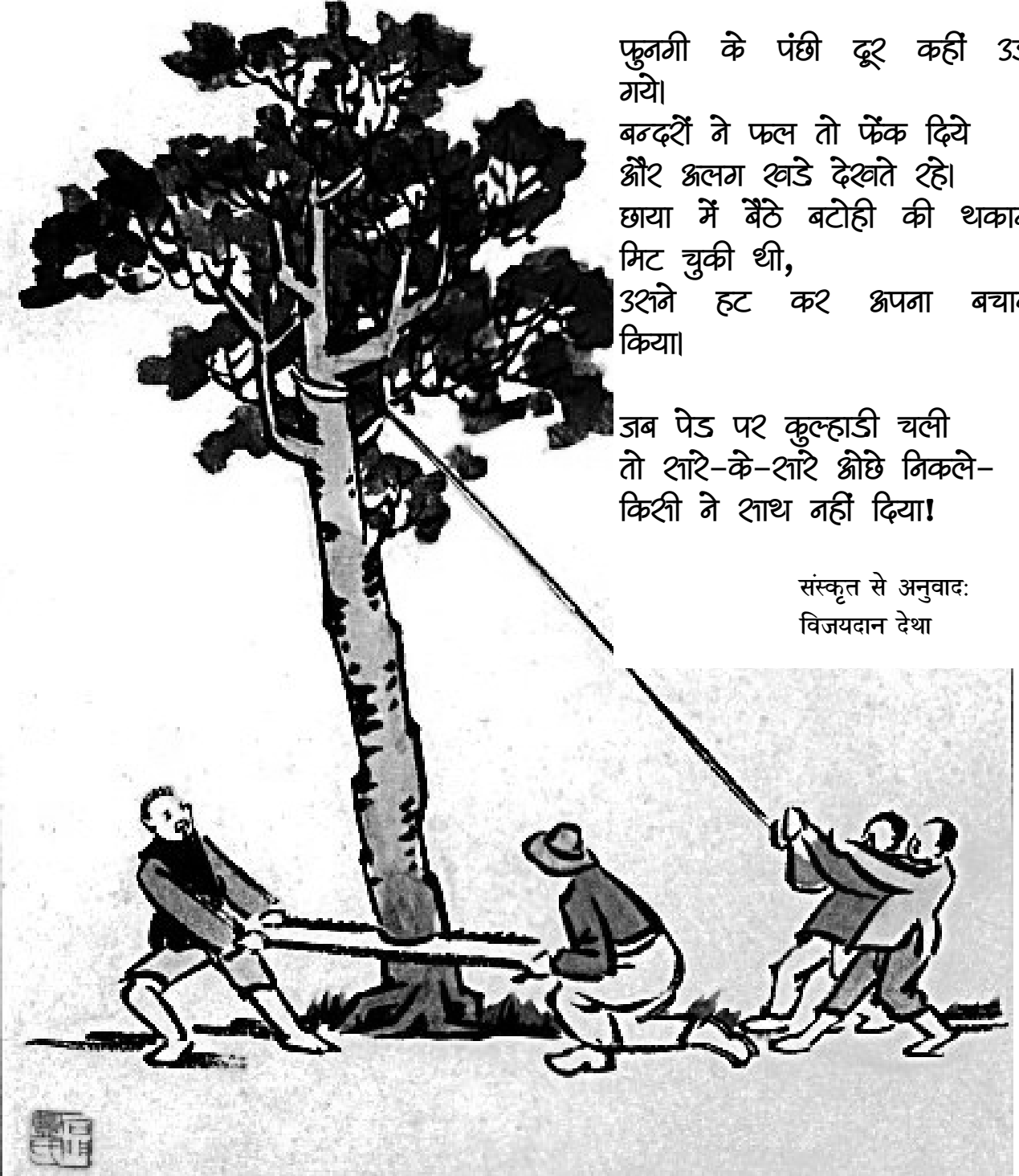
24 घंटे में पूरी फिल्म !

- बी. सुमंगल, चित्र: सुधीर नाथ
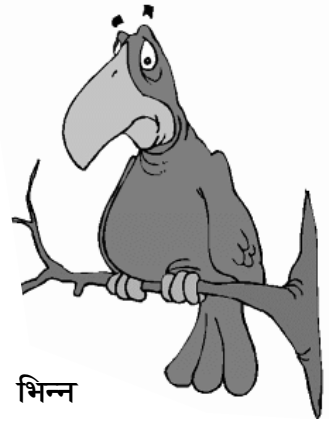
दुनिया में सबसे ज्यादा फिल्में बनाने वाला देश भारत है जो 16 भिन्न भाषाओं में 700 फिल्में एक साल में बनाता है। एक फिल्म बनाने में कितनी देर लगती है? कोई तीन चार महीने से कम नहीं और देखा जाए तो यह भी कम है। हर एक फिल्म के लिये- स्टूडियो में अभिनेताओं को समझाना, कैमरे व सेट को देखना, निर्देशकों को संभालना, स्टंट करने वाले लोगों को देखना और दूसरे विभिन्न लोगों को हर रोज एकत्र करना जैसे ढेरों काम करने पड़ते हैं।

अगर मैं तुम्हें कहूं कि एक पूरी फिल्म केवल 24 घंटे में बनाई गई है तो क्या तुम विश्वास करोगे? वह भी सरल नहीं-इसमें नौ शादी के सीन हैं, लड़ाइयां हैं, गाने और नाचने के सीन हैं, और ढेरों उलझी हुई घटनाएं हैं। हैरान? पर यह सत्य है। एक तमिल फिल्म जिसका नाम स्वंयवरण है, वह कुल 24 घंटे में पूरी की गई थी। स्वयंवरण दुनिया में सबसे कम समय में पूरी होने वाली फिल्म है। इसका नाम 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस' में शामिल है-क्योंकि इसने एक रिकार्ड कायम किया है।

यह फिल्म गिरिधर लाल नागपाल ने बनाई है। इसमें तीन हजार से ज्यादा लोग धक्का मुक्की करके काम कर रहे हैं क्योंकि समय कम है और काम है बहुत बहुत भारी!

कहानी बड़ी सरल है। एक बुजुर्ग अपनी 60 वीं वर्षगांठ मना रहा है। उसे दिल का दौरा पड़ जाता है और उसकी अंतिम इच्छा है कि वह अपने 9 बच्चों की शादी करवा दे। पर एक ही मुसीबत है कि बच्चों ने अपनी पत्नियां पहले से ही चुन ली हैं और अपने पिता जी को नहीं बता सकते हैं।

सारा मजा इसमें है कि बच्चे अपने पिताजी को कैसे समझाते हैं कि उनके पसन्द के व्यक्ति से ही उनकी शादी हो। इसमें न ही कोई रिहर्सल हुआ या कोई सिक्रप्ट (लिखित कथा) है। निर्देशक सिर्फ सीन को बताता है और जैसे ही अभिनेता आते हैं, वह एक ही रिहर्सल के बाद सीन का अभिनय कर
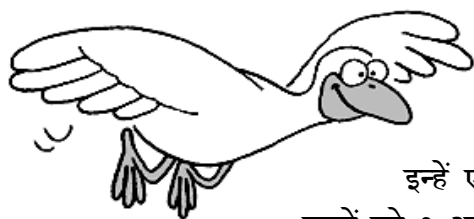
देते हैं।

क्योंकि कहानी में ढेरों एक के बाद एक घटनाएं हैं, इन्हें एक जगह पर नहीं फिल्माया जा सकता और न ही एक सेट से। दृश्यों को 8 अलग जगहों पर फिल्माया गया है।

हर जगह पर कलाकार हैं, सहायक निर्देशक हैं, कैमरामैन और अन्य काम करने वाले लोग हैं। हर एक सहायक निर्देशक को कामों की एक अलग सूची दी गयी है। हर जगह पर एक आदमी की खास ड्यूटी यही है-सब लोगों को एक साथ इकट्ठा करना। दोपहर का समय फिल्म सिटी में कलाकार अब्बास और अभिनेत्री मीरा एक और नाच की तैयारी में लगे हुए हैं।

5 अप्रैल 1999, सबसे पहला शॉट। वह शॉट है जन्मदिन का जलसा। स0 वी0 एम0 स्टूडियो की छठी मंजिल पर मनाया जा रहा है। निर्देशक सी सुन्दर चिल्लाते हैं- ''एक्शन'' और अपनी घड़ी की तरफ देखते हैं। समय है- सुबह के सात बजे।

6 मंजिली ए0 वी0 एम0 स्टूडियो और नीचे बगीचे के बीच भगदड़ मची हुई है। अनेक निर्देशक, फिल्म में काम करने वाले और कलाकार यहां वहां दौड़ रहे हैं। मोबाइल फोन लगातार बज रहे हैं। अभिनेता प्रभुदेवा और फिल्म अभिनेत्री रोजा 9:30 बजे कहीं और नृत्य का अभ्यास कर रहे हैं। तैयारियां करने वाले पसीने से बेहाल हैं, लेकिन काम जारी है।

सुबह 11 बजे अभिनेत्री खुशबू और अभिनेता सत्याराज तपती धूप में केवल एक छाते की छाया में ही प्यार का सीन शूट कर रहे हैं। गुएन्डी रेस कोर्स में निर्देशक रामदास अभिनेता पांड्याराजन और अभिनेत्री कस्तूरी के साथ एक परिवारिक सीन पेश कर रहे हैं।

अभिनेता अर्जुन अपने स्टंट खुद करता है (यानी अपनी शक्ल वाले दूसरों से नहीं कराता, जैसा आमतौर पर होता है)। एक ओर विलेन के गिराने के लिये ढेरों खाली ड्रम लगाए जा रहे हैं, दूसरी ओर उसके ऊपर ढेर सारा टमाटर का सॉस थोपा जा रहा है, खून दिखाने के लिये। अर्जुन और विलेन मंसूर अली खां के बीच ढिशुम-ढिशुम होती है।

शाम के 5:30 बजे-अभिनेता उन्नीत और अभिनेत्री माहेश्वरी, अबु पैलेस के डिस्को में नाचने की कोशिश कर रहे हैं। खुशहालदास हाउस में पर रात का सीन और एक एक्शन सीन की शूटिंग चल रही है। यहां पर एक खलनायक का प्रवेश होता है और वह हीरोइन का अपहरण करके, फिल्म में जोश डाल देता है।

रात के तीन बजे हैं और फिल्म 2 घंटा लेट चल रही है। 4 निर्देशक मिल कर दो सीन को काटकर एक में बदल देते हैं जिससे और देर न हो। पास ही के विजय वाहिनी स्टूडियो में फिल्म का आखरी सीन शूट किया जा रहा हैं। यहां पर 9 जोड़ियों की शादी करने का सीन दर्शाया जा रहा है बहुत से लोग फूलों और सजावट का समान लिये खड़े है। और अब हैं सीन दर सीन।

आखिरी शॉट के लिए 4 कैमरा लगा गये हैं, जिसमें 2 जमीन पर लगाए गए हैं, एक क्रेन पर है और एक हाथ में है।

सेट पर भगदड़ मची हुई है। सारे निर्देशक उस आखिरी शॉट को खत्म करने पर जुटे हुए हैं। 6:30 बजे सुबह सारा परिवार एक जगह पर इकट्ठा होता है। आखिरी शॉट में पिताजी, अपनी व्हील चेअर से खड़े होकर घोषणा करते हैं कि उन्होंने दिल के दौरे का नाटक किया था, जिससे उनके सारे बिगड़े बच्चों की शादी हो जाए। यह नाटक उन्होंने परिवार के डाक्टर के साथ मिल कर रचाा था। निर्देशक सी. सुन्दर इस आखिरी सीन के रीटेक (दोबारा शूटिंग)के बारे में सोचते हैं, लेकिन समय खत्म हो गया है।

सुबह के 6:30 बजे हैं और 6 अप्रैल का दिन है। स्वंयवरण फिल्म एक रिकार्ड है जिसे 16 निर्देशकों ने मिलकर बनाया। गिनने वालों के लिये मजेदार पर संभालने वालों के लिये तौबा!

किस की किस के साथ

यह एक मसाला फिल्म है, जिसमें 19 सह निर्देशक, 45 असिसटेंट निर्देशक, 19 कैमरा मैन, 36 असिसटेंट कैमरामैन, 9 हाथ से कैमरा चलाने वाले, 14 हीरो, 12 हिरोइनें, खलनायक, हास्य अभिनेता, 5 नृत्य मास्टर, 16 असिस्टेंट, 140 नाचने वाले, स्टंट दिखाने वाले, कला निर्देशक, मेकअप आर्टिस्ट, कपड़े फूल व अन्य साजो सामान वाले।

15 जगहों जैनेरेटर, बिजली और माइक के लिए लोग, एक फोटोग्राफर पब्लिसिटी के लिए, 1483 एक्सट्राज (भीड़ की सीन के लिए) एक साथ मिलकर यह एतिहासिक फिल्म बनी। इसके बावजूद परदे के पीछे काम संभालने के लिए 23 लोग लगाए गए। बाप रे बाप! और तो और सितारों का मेकअप करने वाले, उनके साथ छाता लेकर चलने वाले, उनकी तरफ बड़ा सा पंखा घुमाने वाले (जब भी वे इधर उधर हिलें) इन सब को हम कैसे भुला सकते हैं?

और वहां पर मैं भी था जो 'लिम्का बुक आफ रिकार्डस' की तरफ से आया था। और एक पत्रकार जोनाथन कार्प जो एक अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका के लिये चटपटी खबर बनाना चाहता था और गिद्ध की तरह हर चीज देख रहा था। हमें मिलाकर पूरे 3028 लोग इस फिल्म को बनाने में लगे।

- www.pitara.com से साभार

अनुवाद : स्मिता दयाल

फूल बनाओ

- एक चौकोर कागज लो।
- चित्र में दिखाए अनुसार कोनों को नाम दे दो।
- अब क ख को मोड़ कर ग घ से मिलाओ। फिर खोल दो।
- अब क ग को मोड़ कर ख घ से मिलाओ। फिर खोल दो।
- अब कागज को पलट दो।
- अब ग कोने को मोड़ कर ख से मिलाओ। ग ख मोड़ को दबाकर पक्का कर लो, फिर खोल दो।
- अब क को घ से मिलाओ। मोड़ को दबाकर पक्का कर लो, फिर खोल दो।
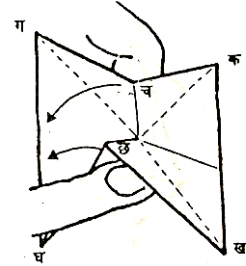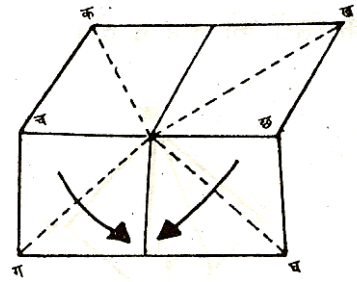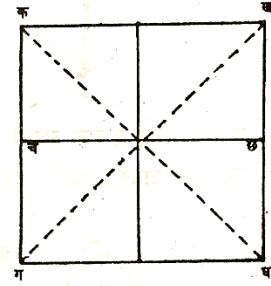
- अब जब मोड़ों पर कागज को तह लगाओगे तो तुम्हें ऐसी आकृति मिलेगी।
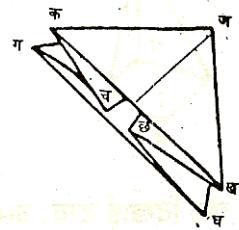
- अब क को मोड़कर ज पर ले जाओ। ऐसे ही ख को मोड़कर भी ज पर ले जाओ। ऐसा ही पिछली ओर भी करो।
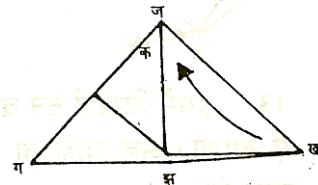
- तुम्हें ऐसा आकार मिलेगा।
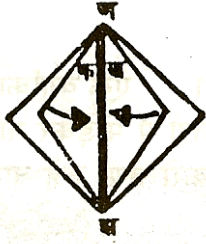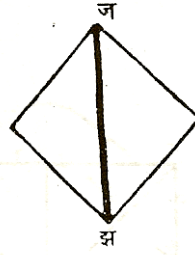
- तीर की दिखाई दिशा में कोनों को आपस में मिलाओ। पीछे पलट कर भी ऐसा ही करो।
- इस तरह बनी आकृति के सिरों को नाम दे दो।
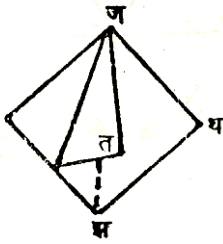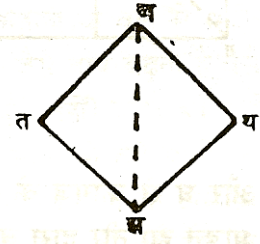
- अब त और ज भुजा को मोड़ बनाते हुए ज झ रेखा से थोड़ा आगे लाओ।
- इसी तरह ज और थ भुजा को भी मोड़ बनाते हुए ज और झ रेखा से थोड़ा आगे लाओ।
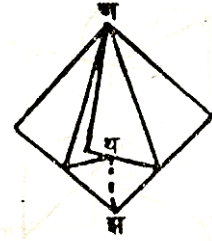
- इस तरह बने सिरों को एक दूसरे में फंसा दो। आकृति को पलटो और इस ओर के सिरों को भी इसी तरह मोड़कर एक दूसरे में फंसा दो।
- अब झ सिरे की ओर से एक छोटा छेद दिखाई देगा, उसमें जोर से फूंक मारो। फूंक से आकृति फूल जायेगी। यह फूली हुई आकृति एक कली की तरह दिखाई देगी।

- इसमें दिखाई देने वाली पंखुड़ियों को अलग-अलग दिशाओं में खोलो। अब चाहो तो नीचे कागज की ही एक डंडी बना कर लगा दो।
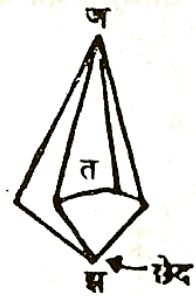
65 दिन तक समुद्र में एक छोटी सी रबड़ की नाव में, अकेले, बिना सामान के, कोई जिंदा रह सकता है? तुम्हारा क्या ख्याल है? असल में तो समुद्र के बीच डूबते जहाजों से बचे लोग भूख-प्यास से मर जाते हैं। भूख से भी ज्यादा प्यास उन्हें मार डालती है क्योंकि समुद्र का पानी बेहद नमकीन होता है। तो फिर कोई 65 दिन तक समुद्र में जिंदा कैसे रह सकता है? हां, ऐसा वाकई हुआ। ए. बोम्बार्ड नाम के एक फ्रांसीसी डाक्टर के साथ ऐसा हुआ। पर सबसे हैरानी की बात तो यह है कि बोम्बार्ड किसी मजबूरी का मारा नहीं था। उसने यह यात्रा जानबूझ कर की थी। यह एक खतरनाक प्रयोग था- यह दिखाने के लिये कि सागर में भटका कोई व्यक्ति, समुद्र की देनों से ही जिंदा रह सकता है।

बोम्बार्ड अटलांटिक सागर पर यात्रा करता हुआ यूरोप के समुद्र तट से अमरीका के समुद्र तट पर पहुंचा। इस बीच उसने सिर्फ मछलियां और छोटे छोटे जीव पकड़कर खाए। लेकिन उसने प्यास बुझाने के लिये क्या किया? उसने मछलियों को दबाकर उनका रस निकाला और पीकर काम चलाया। हालांकि ऐसा करने में उसकी हालत बहुत खराब हो गई लेकिन फिर भी यह एक सफल प्रयोग रहा।

लेकिन इसमें एक सवाल परेशान करता है? अगर बोम्बार्ड बेस्वाद और बदबूदार मछलियों का रस पी सकता था तो समुद्र का नमक मिला पानी क्यों नहीं?

असल में बात इतनी सरल नहीं है कि समुद्र के पानी का स्वाद इतना खारा है कि पिया नहीं जाता। बात यह है कि अगर आदमी उसे पी भी ले तो मर जाएगा। आओ समझें क्यों।

एक बड़े आदमी को हर रोज करीब तीन लीटर पानी की जरूरत होती है। एक लीटर समुद्र के पानी में करीब 35 ग्राम लवण घुले होते हैं जिसमें से 27 ग्राम तो खाने वाला नमक ही होता है। तो अगर आदमी अपनी जरूरत जितना समुद्री पानी पी ले तो उसके शरीर में 100 ग्राम नमक पहुंच जाएगा। इतना नमक अगर खून में एक साथ पहुंच जाए तो परिणाम भयंकर होंगे। आमतौर पर खून में से फालतू नमक और दूसरे नुकसानदेह पदार्थों को हमारी किडनी या यकृत छानकर निकाल देती है और पेशाब से बाहर फेंक देती है। एक बड़ा आदमी करीब डेढ़ लीटर पेशाब एक दिन में बाहर निकालता है। लेकिन बदकिस्मती से समुद्री खारे पानी में नमक की मात्रा पेशाब से बहुत ज्यादा होती है। तो अगर समुद्री पानी
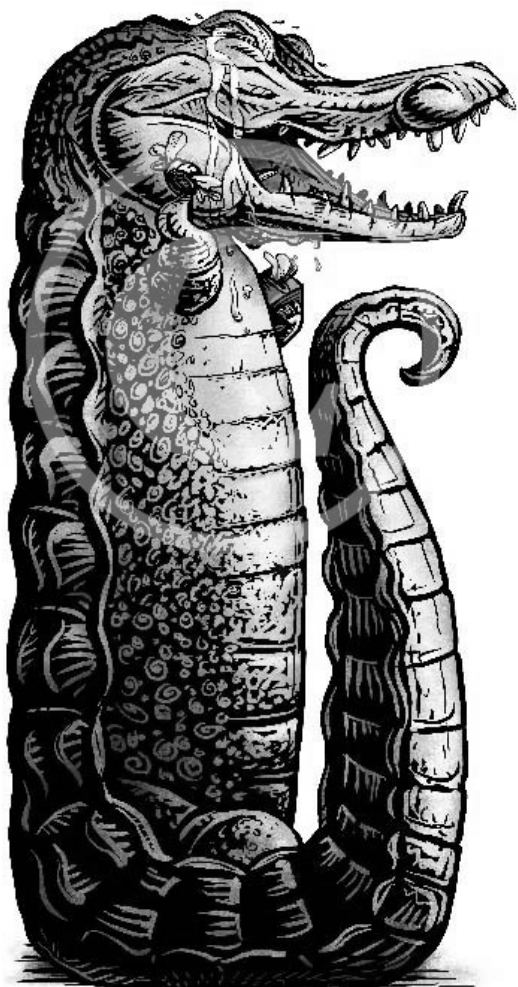
पियें, तो उसमें घुले नमक को बाहर निकालने के लिये आदमी को बहुत सारा सादा पानी पीना पड़ेगा, वरना वह मर जाएगा।

तो फिर इतने नमकीन पानी में समुद्री जीव कैसे जिंदा रहते हैं?

असल में समुद्री जीवों को सादा पानी अपने भोजन से मिलता है। वे दूसरे जीवों को खाते हैं जिनके शरीर में खून और दूसरे द्रव्यों में काफी सादा पानी होता है। ओह, ओह, ओह! यह गुत्थी तो फिर भी नहीं सुलझी। बड़ी मछली को छोटी मछली खाकर पानी मिला। छोटी मछली को नन्हें जीवों को खाकर पानी मिला। लेकिन इन सब ने अपने शरीर में समुद्री पानी के साथ घुसने वाले नमक का क्या किया?

इसका जवाब है- मगरमच्छ के आंसुओं में। हैं? यह मगरमच्छ बीच में कहां से टपक पड़ा? ठहरो, ठहरो, ठहरो..... ....यह मामला जरा मजेदार है।

बहुत पहले से लोग यह देखते आ रहे हैं कि मगरमच्छ अपने शिकार को चट करने के बाद मोटे मोटे आंसू टपकाता है, जैसे उस बेचारे शिकार के मरने पर शोक प्रकट कर रहा हो। कितना दोगलापन! पहले बेचारे को चबा जाओ और फिर दिखावे के टसुए बहाओ। तभी तो नकली आंसुओं को मगरमच्छी आंसू कहा जाता है। पर असल में बेचारे मगरमच्छ को दोष देना गलत है। समुद्री जीवों जैसे कछुए, सांप, छिपकली और मगरमच्छों में नमक ग्रंथियां होती हैं जो आंखों की पोरों में खुलती हैं। इनसे बहते आंसुओं से ढेर सारा नमक बाहर आता है।

समुद्री कछुए पूरे साल समुद्र के पानी में ही तैरते रहते हैं। लेकिन साल में सिर्फ एक बार, रात के अंधेरे में, एक खास दिन मादा कछुआ रेतीले तट पर आती है। और अपने अंडे रेत में दबा देती है। जब ये कछुआ माताएं वापस जाती हैं तो फूट फूट कर रोती हैं और इनके नमकीन आंसू सूखी समुद्री रेत पर टपकते रहते हैं। ये कछुए अपने टसुए बहाने के लिये प्रसिद्ध हैं। लोग सोचते हैं- मां तो मां है। बेचारी अपने अंडों के लिये दुखी हैं। पर अफसोस! यह दुख दर्द का नहीं बल्कि नमक का मामला है। पानी के अंदर तो इनके
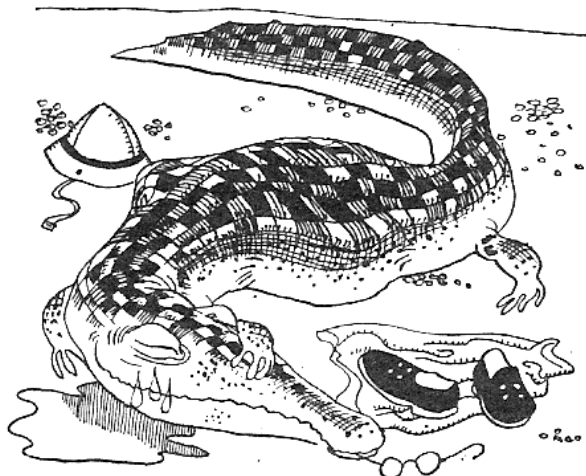
आंसू घुल जाते हैं और दिखते नहीं। इसलिये इन आंसुओं का राज खुलने में बहुत वक्त लगा।

समुद्री चिड़ियों की कहानी तो और भी मजेदार है। उनके नमकीन आंसू नाक के छेद से बहते हैं। अगर एक समुद्री चिड़िया सीगल (seagull) को बहुत नमकीन खाना खिला दो, तो 10-12 मिनट बाद उसकी चोंच के आगे की नोक से बूंदें टपकने लगेंगी। ऐसा लगेगा जैसे उसे बहुत तेज़ जुकाम हो गया है। इन चिड़ियों में यह नमक उपकरण इतना बढ़िया काम करता है कि इन्हें नमकीन पानी पिये बिना चैन नहीं आता। जब सीगल को पिजड़ों में पाला गया और उन्हें नमकीन पानी नहीं दिया गया तो वे ज्यादा दिन जिन्दा न रह सकीं।

सीगल

ओह, पर मछलियों की बात तो रह ही गई। उनके अन्दर नमक छानने का काम कहीं और होता है- उनके गलफड़ों या gills में। उनकी किडनी बहुत छोटी होती हैं और इतना नमक नहीं निकाल सकतीं। तो उनके गलफड़ों में खास कोशिकाएं खून से नमक छानकर उसे एक गाढ़े घोल के रूप में निकाल देती हैं।

तो अब आगे से तुम्हारा कोई दोस्त नकली आंसू टपकाए तो उसे मगरमच्छी आंसू न कहकर ग्लीसरीन के आंसू बोलना। जानते हो क्यों? फिल्मों में अभिनेताओं के नकली आंसू ग्लीसरीन से बनाए जाते हैं।

-सहयोग, 'शीतल चौहान'

बन्द करो यह सब ! मुझे अच्छी तरह पता है कि यह आंसू असली नहीं हैं।

कथा : अंशुमाला व कुणाल

चित्र :

अच्छे बच्चे मनलगाकर काम करते हैं।
???
सर सो गये हैं
खुर्र... खुर्र...
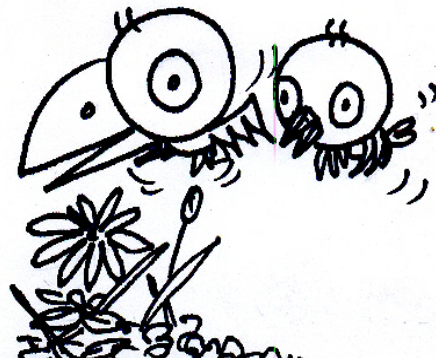
अच्छे बच्चे गंदी चीजें नहीं खाते।
??
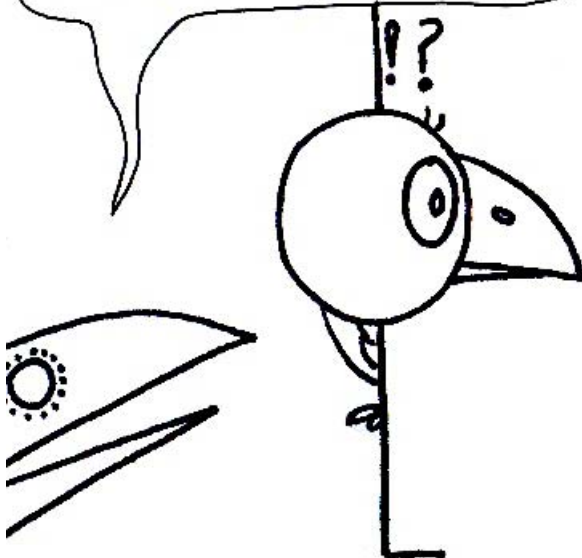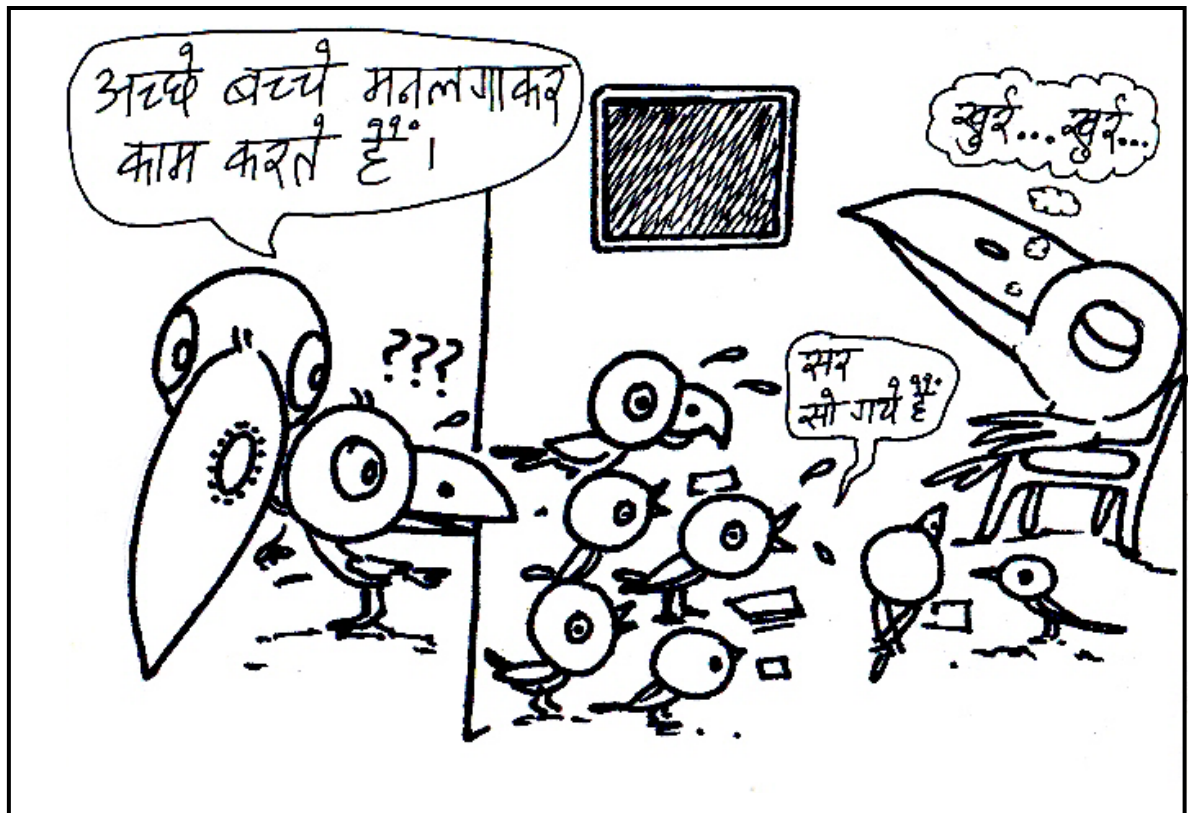
अच्छे बच्चे
बड़ों के सामने नहीं बोलते।
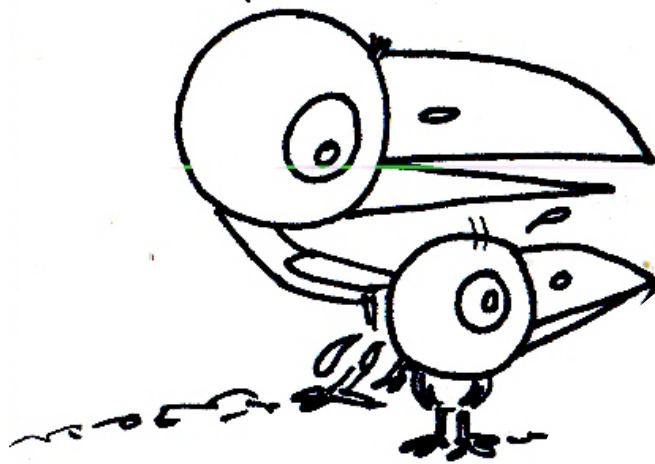
अच्छे बच्चे मिट्टी में
नहीं खेलते।
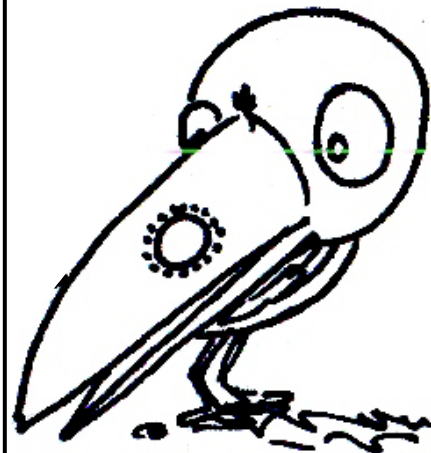
पता नहीं अच्छे बच्चे तरबूज खाते होंगे कि नहीं?
?!
!
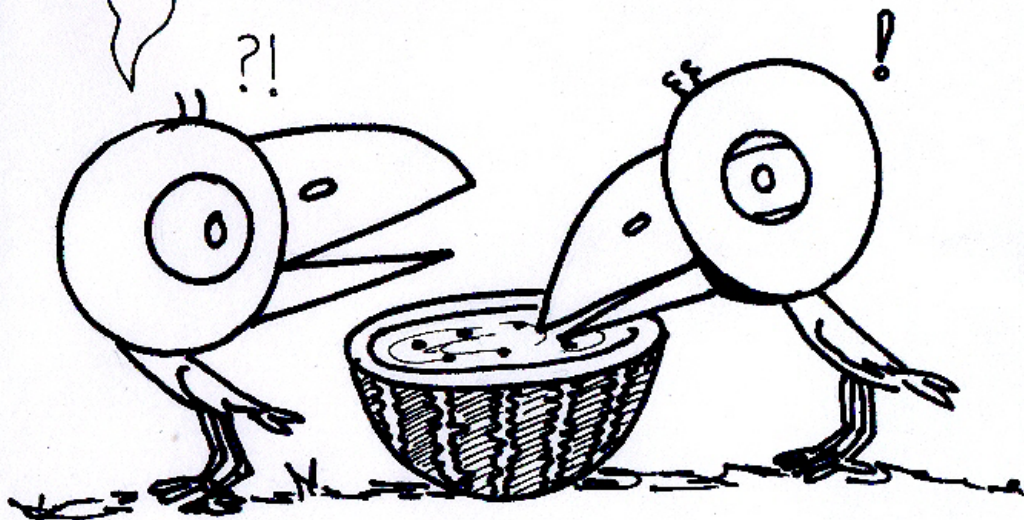
मिर्च का मजा

-रामधारी सिंह दिनकर

एक काबुली वाले की कहते हैं लोग कहानी,
लाल मिर्च को देख गया भर उसके मुंह में पानी।

सोचा, क्या अच्छे दाने हैं, खाने से बल होगा,
यह जरूर इस मौसम का कोई मीठा फल होगा।

एक चवन्नी फेंक और झोली अपनी फैलाकर,
कुंजड़िन से बोला बेचारा ज्यों-त्यों कुछ समझाकर।

''लाल-लाल, पतली छीमी हो चीज अगर खाने की,
तो हमको दो तोल छीमियां फकत चार आने की।''

''हां, यह तो सब खाते हैं''-कुंजड़िन बेचारी बोली,
और सेर भर लाल मिर्च से भर दी उसकी झोली।

मगन हुआ काबुली फली का सौदा सस्ता पाके,
लगा चबाने मिर्च बैठकर नदी-किनारे जाके।

मगर, मिर्च ने तुरंत जीभ पर अपना जोर दिखाया,
मुंह सारा जल उठा और आंखों में जल भर आया।

पर, काबुल का मर्द लाल छीमी से क्यों मुख मोड़े?
खर्च हुआ जिस पर उसको क्यों बिना सधाये छोड़े?

आंख पोंछते, दांत पीसते, रोते औ' रिरियाते,
वह खाता ही रहा मिर्च की छीमी को सिसियाते।

इतने में आ गया उधर से कोई एक सिपाही,
बोला, ''बेवकूफ! क्या खाकर यों कर रहा तबाही?''

कहा काबुली ने-''मैं हूं आदमी न ऐसा-वैसा।
जा तू अपनी राह सिपाही, मैं खाता हूं पैसा!''

छीमी: फली
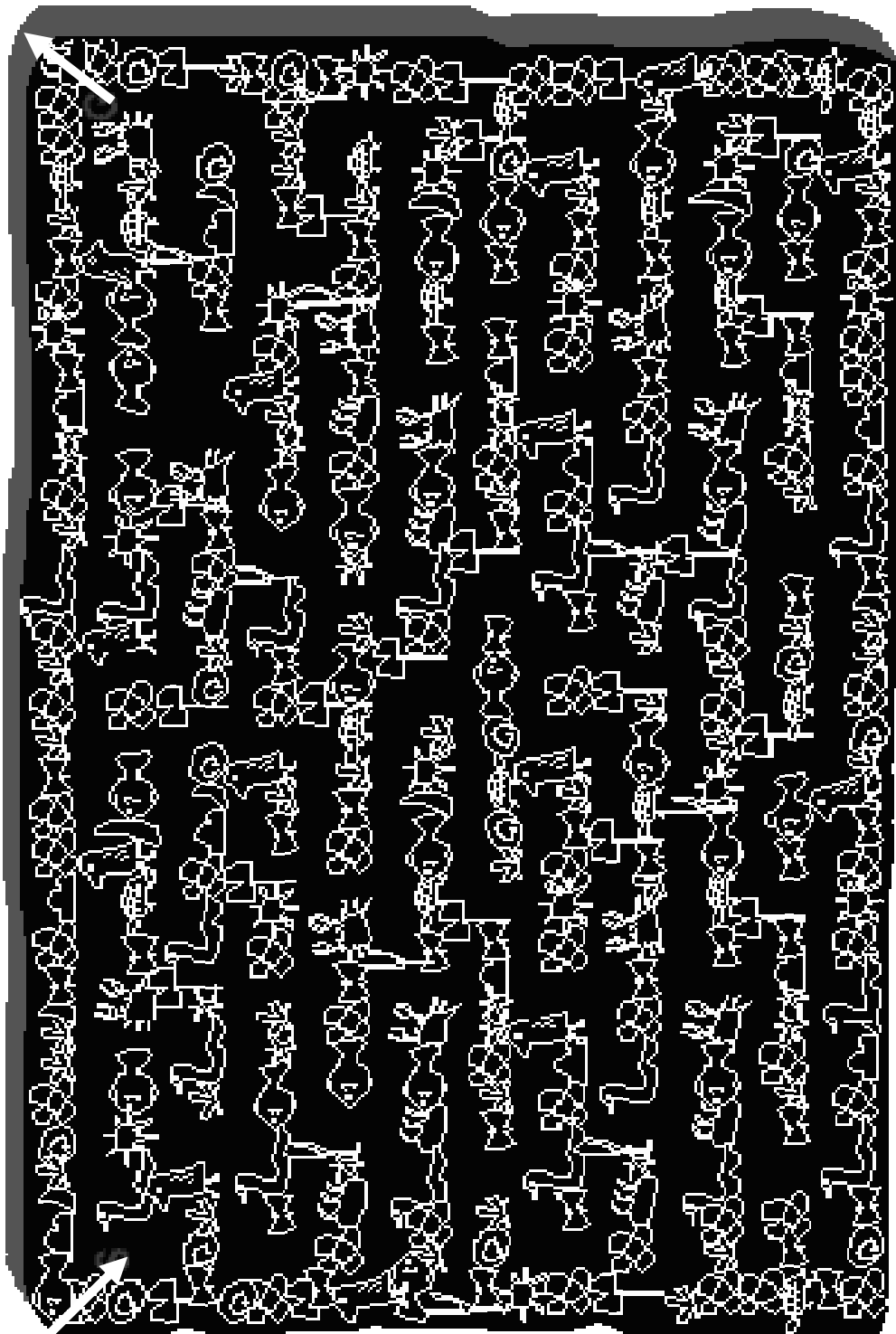
रास्ता ढूंढो

ऊपर दिये गए गोरखधंधे में तीर से दिखाए निशान से अंदर घुसो और बाहर निकलने का रास्ता ढूंढो।

बुद्ध-प्रतिमा की गिरफ्तारी

एक व्यापारी अपनी पीठ व दोनों कंधों पर रेशमी कपड़े की पचास गांठें लिये जा रहा था। गर्मी से परेशान होकर उसने रास्ते में बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा की छांह तले विश्राम करने का विचार किया। पास में सारी गांठें जमा कर वह लेट गया। लम्बा रास्ता, गांठों का बोझ व गर्मी के मारे वह इतना थक चुका था कि सोते ही गहरी नींद आ गयी। जब आंख खुली तो एक भी गांठ नहीं दिखी। उसने तत्काल पुलिस को सूचना दी।

ओका नाम के प्रसिद्ध न्यायधीश ने जांच के लिए कार्यवाही शुरू की। 'हो न हो, बुद्ध की उसी प्रतिमा ने माल चुराया है।' न्यायधीश ने अविलम्ब अपना निर्णय सुनाया,

'निरीह जनता के माल की सुरक्षा करना उसका कर्त्तव्य है, किन्तु वह पूर्ण रूप से उस में असफल रहा। इस बेमिसाल गैर-जिम्मेदारी के लिए उसे फौरन गिरफ्तार करो।'

आदेश मिलने की देर थी कि पुलिस ने बिना देर किये वह प्रतिमा हिरासत में लेकर न्यायधीश के सामने पेश की। भगवान बुद्ध की प्रतिमा! और उसकी गिरफ्तारी! उत्सुक दर्शकों की भीड़ से कचहरी खचाखच भर गयी। क्या शाक्यमुनि की प्रतिमा को भी दंड मिलेगा? कैसा सिरफिरा है? किन्तु उसके न्याय का सर्वत्र दबदबा था। कानाफूसी और कोलाहल से कचहरी गूंज उठी।

न्यायधीश ओका ने न्याय की कुर्सी पर बैठते ही तैश में आकर उत्सुक श्रोताओं को घुड़की पिलायी, 'इस तरह बेशर्मी से हंसने, शोर मचाने, अदालत को सर पर उठाने का तुम्हें क्या अधिकार है? तुम सबने अदालत की अवमानना की है, उसका मखौल उड़ाया है। इस अपराध के लिए अदालत तुम्हें जुर्माने व कैद की सजा देती है।'

लोगों ने तुरत-फुरत क्षमा याचना की। न्यायधीश ने थोड़ा नम्र होकर कहा, 'हर व्यक्ति को जुर्माना अदा करना ही पड़ेगा। अलबत्ता, एक रियायत दे सकता हूं। तीन दिन के भीतर कपड़े की एक-एक गांठ पेश करने वाले को माफ कर दिया जायेगा, अन्यथा कैद की सजा बरकरार रहेगी।'

एक व्यक्ति द्वारा पेश की गई गांठ को व्यापारी ने तुरंत पहचान लिया। और यही न्यायधीश ओका की न्याय-बुद्धि थी। असली चोर से सारा माल बरामद करके उसे सख्त सजा दी गयी। दर्शक अपनी-अपनी गांठें लेकर ओका के अद्भुत न्याय की प्रशंसा करते बखुशी लौट गये।

-ज़ेन बोध कथाएं, 'रूंख' से साभार

कमाल की चींटियां

किसी जगह थोड़ी-सी चीनी डाल दीजिये। फिर देखिये, पहले एक चींटी भूली-भटकी वहां पहुॅचेगी; चीनी को चखेगी; फिर एक दाना लेकर भागेगी। रास्ते में जो चींटी मिलेगी, उसके साथ क्षण भर सिर मिलाकर खड़ी होगी। उसके बाद आप दूसरी चींटी को भी चीनी की ओर दौड़ते पायेंगे। थोड़ी देर में चींटियों का एक पूरा दल उस चीनी पर जुट जायगा।

परन्तु मामला यहीं समाप्त नहीं होता। हमारे मित्र पं0 हरिवंश जी ने एक दिन चींटियों का यही कौतुक देखने के लिये चीनी का थैला खूंटी पर टांग दिया। घण्टे भर तक कोई विशेष हलचल देखने में न आई; केवल दो-चार चींटियां थैले के अन्दर-बाहर घूम रही थीं। परन्तु और एक घण्टे बाद दृश्य देखने योग्य था। चींटियों के दो बड़े-बड़े दल काम में जुटे थे। एक दल थैले के अन्दर से चीनी के दाने निकाल-निकालकर ऊपर से भूमि पर गिराने लगा था और दूसरा दल नीचे गिरे हुए दानों को पंक्ति बांधकर अपने बिल तक पहुंचाने में जुटा था।

प्रत्येक चींटी एक दाना लेकर सीधी खड़ी हुई दीवार पर से उतरे, बार-बार गिरे, इसकी अपेक्षा यह एक अच्छा उपाय चींटियों ने कर लिया था। पर इस उपाय के लिये केवल बुद्धि और संगठन की ही जरूरत नहीं बल्कि वह साधन-वाणी-भी चाहिये जिससे यह योजना दल के प्रत्येक प्राणी को समझाई जा सके। यानी चींटियों में आपस में बातचीत करने का कोई तरीका अवश्य होता होगा।

एक दिन वन के अंदर
गधे को मिला ताज।
ताज पहन वह बोला,
मैं सबका महाराज।

इस जंगल का राजा,
शेर नहीं अब होगा।
हाथी भी अब देखो,
मेरे कपड़े धोगा।

सुन ये बात गधे की,
बोली उससे बिल्ली।
गधे मियां क्यों अपनी,
उड़वाते हो खिल्ली।

सिर्फ ताज से कोई,
क्या बनता महाराज।
बुद्धि और शक्ति वाला,
करता है यहां राज।

हर प्रसाद रोशन,
नगर पालिका परिषद, हल्द्वानी।
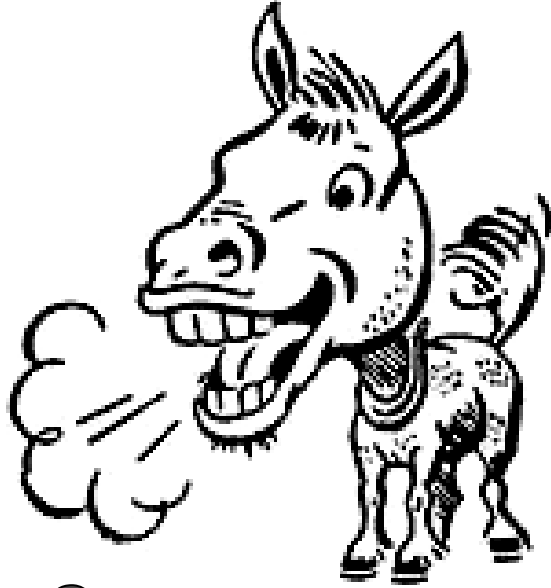
बाबूजी बारात में

विष्णु प्रभाकर

बाबू गजनंदलाल पुरानी दिल्ली के एक पुराने मोहल्ले में रहते थे। वज़न उनका कुछ बहुत भारी नहीं था, कुल दो मन बीस सेर (लगभग 90 किलो) के थे। लेकिन इतना तेज चलते थे कि लोग उन्हें देख पाएं, इसी बीच में धमकचाल से चलते हुए वह दूर निकल जाते थे। कालेज में पढ़ाते थे लेकिन बस में बैठे उन्हें कभी किसी ने नहीं देखा। बात यह थी कि जब शुरू-शुरू में नई बसें आई, तब उनके दरवाजे कुछ तंग थे। बाबू गजनंदनलाल दरवाजे में फंस गए। ऊपर से कंडक्टर चीख रहा है, नीचे से चढ़नेवाले चिल्ला रहे हैं पर बाबू गजनंदन हैं कि हंसे जा रहे हैं। काफी जोर लगाने के बाद बोले, ''देखो भाई, शोर मत मचाओ। कहीं मेरा बैलेंस बिगड़ गया, तो बस उलट जाएगी।''
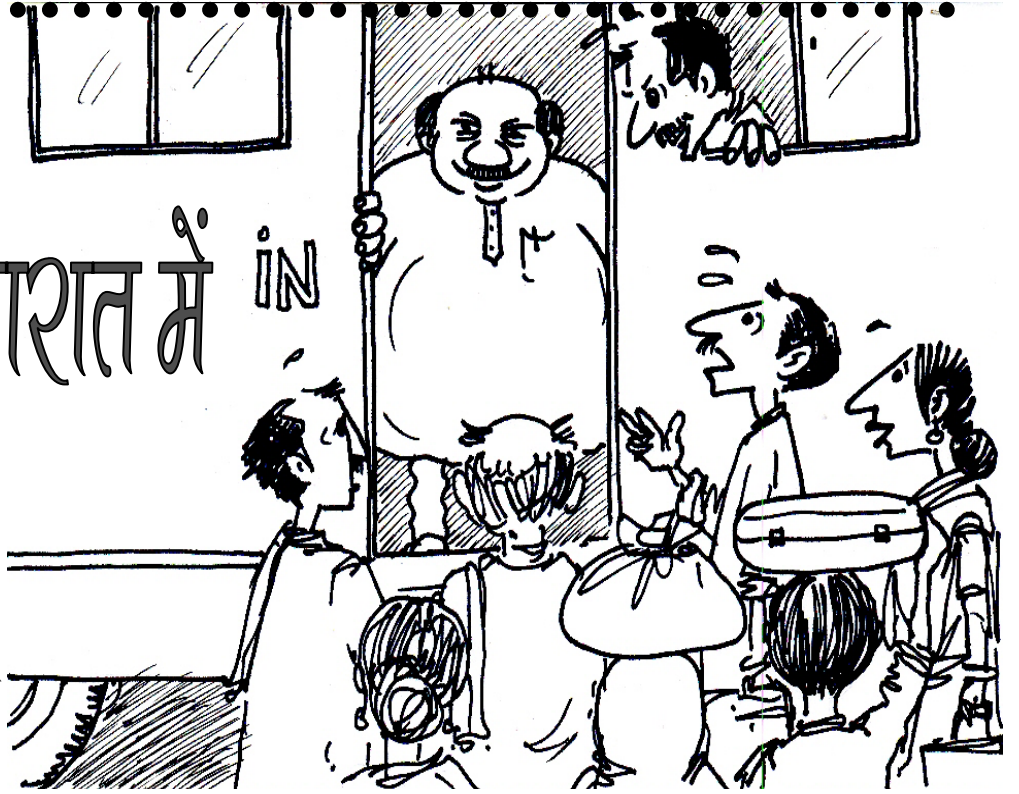
फिर तो वह ठहाका लगा कि बस सचमुच उलटते बची। अच्छा यही हुआ कि उस झटके के साथ बाबू गजनंदनलाल नीचे आ गए। उन्होंने वहीं पर कान पकड़े, ''मैं अब कभी बस में नहीं चढूंगा। देखो तो कैसा पिचक गया हूं।''

एक बार ऐसा हुआ कि उन्हें, अपने एक मित्र के लड़के की बारात में जाना पड़ा। बारात काफी दूर जा रही थी, इसलिए वर के पिता ने एक नयी बस किराए पर ली। बाबू गजनंदन का ख्याल करते हुए उन्होंने यह भी देख लिया कि बस का दरवाजा काफी चौड़ा है। बाबू गजनंदन बहुत खुश हुए। बोले, ''आप बहुत चतुर हैं जानते हैं कि मेरे कारण बारात में खूब मजा रहेगा, इसलिए मेरा बड़ा ध्यान रखते हैं!''

और सचमुच जिस घड़ी बाबू गजनंदनलाल पधारे, उसी घड़ी से ठहाके लगने शुरू हो गए। लेकिन बाबू गजनंदन कुछ उदास दिखाई दे रहे थे। एक मित्र ने पूछा, '' बाबूजी,

बारात में जाते समय आप उदास क्यों हो गए''

बाबूजी ने उत्तर दिया, ''क्या बताऊं भाई, सवेरे जब चलने लगा, तब मां बोली, 'बेटा तुझे हो क्या गया है दिन पर दिन सूखता जा रहा है, खुराक घट रही है। यहां तो मैं तेरा ध्यान रखती हूं, बारात में तेरी देखभाल कौन करेगा, सो, बेटा, तू संकोच मच करियो, खूब खाइयो।''

यह कहकर बाबू गजनंदनलाल थोड़ा मुस्कराए। बोले, ''बेचारी मां! उसे क्या पता कि मैं बारात में जाने के लिए एक सप्ताह से आधे दिन का उपवास कर रहा हूं। भला सोचो, लड़की वाले का ख्याल भी तो रखना है। बेचारा बड़े चाव से तरह-तरह के पकवान और मिठाइयां बनवाएगा। तुम आजकल के छोकरों, मिठाई से तुम्हें सख्त परहेज़ है। पकवान खाने से तुम्हारे पेट में दर्द हो जाता है। मैं तुम्हारी मदद करने के लिए तो जा रहा हूॅ। जब लौटूंगा, तब मां देखकर बहुत खुश होगी। समझ जाएगी कि उसका बेटा भोला नहीं है........''

उनकी बातें सुनकर बराती खूब हंसे, इतने कि तोंद नाचने लगी। तभी अचानक क्या हुआ कि बस एक झटके के साथ रुक गई। पहले तो कोई कुछ नहीं बोला, फिर सब बाहर झांकने लगे। चारों ओर हरे-भरे खेत थे और सामने एक छोटा-सा रेलवे स्टेशन नजर आ रहा था। उन्होंने समझा कि शायद यहां से कोई बराती चढ़नेवाला है। लेकिन तभी ड्राइवर ने आकर कहा, ''आप सब लोग नीचे उतर जाएं। पहिए में पंक्चर हो गया है। सुधारने में कुछ देर लग. ेगी।''

''लो, सिर मुंडाते ही ओले पड़े!आखिर हुआ क्या, नयी बस है। कैसा खराब जमाना आ गया है। लोग बेईमान हो गए हैं। नये टायर भी इतने रद्दी!''

इसी तरह की बातें करते हुए बाराती धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे। और जब उन्होंने बाबू गजनंदनलाल को धमकचाल से नीचे उतरते हुए देखा, तो कोरस में अट्टहास करके चिल्ला उठे, ''हम भी कहें कि नयी बस क्यों बिगड़ी। यह हाथी का बच्चा इसमें सवार जो था!''

बाबू गजनंदनलाल भी जोर से हंसे, इतने कि तोंद बिलबिला उठी। बोले, ''तुम लोग समझदार मालूम होते हो। मेरा नाम गजनंदन है और उसका मतलब होता है, हाथी का बच्चा!''

आखिर बस ठीक हो गई और हंसते खिलखिलाते बारात जनवासे तक सकुशल पहुंच गई। वहां खूब स्वागत सत्कार हुआ। जिसे देखो वही बाबू गजनंदनलाल की ओर माला लिए बढ़ा जा रहा है। वर यह देखकर बहुत उदास हो गया। अपने साथी से बोला, ''पिताजी ने बाबू गजनंदन को साथ लाकर बड़ी गलती की। सब लोग उन्हीं की ओर देखते हैं, मेरी ओर कोई नहीं देखता!''

जब नाश्ते का बुलावा आया, तब भी वहां सबसे आगे थे और जीमते समय भी सबके बीच में गणेशजी की तरह डटकर बैठ गए । हर शुभ कार्य में सबसे पहले गणेशजी की पूजा

होती है, सो कन्यापक्ष के लोग सबसे पहले उन्हीं की ओर आते। बाराती बार-बार कहते, ''नहीं, नहीं इतना नहीं परसो, राशन का जमाना है।''

बारात धूमधाम से चली। अपनी चिर-परिचित तंग मोहरी की पतलून पहने बाबू गजनंदनलाल आगे थे। अंगरेजी बाजे को देखकर लोग इतने खुश नहीं हुए, जितने उनकी थिरकती हुई तोंद को देखकर। सब हंसते-हंसते दोहरे होने लगे। इसी हंसी में विवाह के सब काम पूरे होने लगे। फेरे भी पूरे हो गए, पर तभी वहां पर कुछ परेशानी नजर आई। बाबू गजनंदन ने पूछा, ''क्यों भई, क्या बात है?'' वर के भाई ने कहा, ''कोई खास बात नहीं चाचाजी, फोटोग्राफर वर-वधू की फोटो खींचना चाहता है। वह चाहता है कि बहू जरा हंसें लेकिन वह सिर नीचा किए बैठी है, मुंह ऊपर उठाती ही नहीं!''

बाबू गजनंदन बोले, ''अरे, तो इसमें क्या बात है, आओ मेरे साथ!''

और धमकचाल से दौड़ते हुए वह मंडप में आ खड़े हुए। देखा कि सभी लोग बहू से प्रार्थना कर रहे हैं, ''बेटी, जरा हंस दो। बस, एक बार जरा मुस्करा दो।''
बाबू गजनंदनलाल हांफते हुए एकाएक बोल उठे, ''ना ना, बेटी, हंसना मत, मोती झर जाएंगे। बस, तुम जरा एक बार मेरी ओर देख लो!''

नयी आवाज थी और नयी बात भी। बहू ने एकाएक सिर उठाकर जो उनकी ओर देखा, तो जैसे धूप खिल उठी। वह हंस पड़ी। बस, उसी क्षण फोटोग्राफर ने एक-एक करके कई चित्र उतार लिए। फिर उनकी ओर मुड़कर कहा, ''बाबू साहब, जो कोई नहीं कर सका, वह आपने कर दिखाया। बहुत-बहुत शुक्रिया!''

बाबू गजनंदन सहसा कठोर होकर बोले, ''वाह, जनाब, यह भी खूब रही! शुक्रिया से मेरी भूख मिटनेवाली नहीं है! अभी एक सुन्दर-सा फोटो मेरा भी उतारो। मां को जाकर दिखाना होगा कि मैंने अपना कितना ध्यान रखा है।''

और फिर उस अट्टहास के बीच वह फोटो खिंचवाकर ही वहां से हटे। आज भी वह फोटो उनके कमरे में लगा हुआ है। मोटे-मोटे अक्षरों में उस पर लिखा हुआ है-'बाबू गजनंदनलाल बारात में!'

संत

जापान में एक जगह है क्योतो। वहां पर एक मठ में एक प्रसिद्ध संत रहते थे जिनका नाम था कैचु। एक दिन क्योतो के गवर्नर की इच्छा हुई कि वह उसे से मुलाकात करे। मठ के सेवक ने संत के सामने कार्ड प्रस्तुत किया। जिस पर लिखा था: 'कितगाकि, गवर्नर क्योतो।'

'मुझे इस व्यक्ति से कोई वास्ता नहीं है।' कैचु ने सेवक को कार्ड लौटाते कहा, 'कह दो उसे, फौरन यहां से चला जाए।'

सेवक ने विनम्रता से गवर्नर को कार्ड लौटाया तो वह तुरंत संत की मंशा भांप गया। 'वाकई मुझे से भारी गलती हो गयी।' और उसने बिना देर किये अपनी गलती सुधार ली। 'गवर्नर क्योतो' को पेंसिल से काट कर उसने सेवक को कार्ड वापस सौंपते हुए कहा, 'अपने गुरु से एक बार और पूछ लीजिए।'

'ओह! यह कितगाकि है क्या?' संत ने कार्ड पर नजर डालते कहा, 'मैं जरूर मिलना चाहूंगा उस से।'

पवित्र

गंगा किनारे स्नान के लिए आये कुछ पण्डितों की परेशानी को समझ कर कबीर ने अपना लोटा मांज-धोकर उन्हें देना चाहा।
वे बोले, ''वहीं रख, वहीं रख! तेरा लोटा छूकर क्या अपवित्र होना है हमें?''
शान्त मुद्रा से कबीर ने कहा, ''गंगाजल से साफ करने पर यह लोटा पवित्र न हुआ तो कोई यहां नहा कर भी क्या पवित्र होता होगा!''

दिमागी दौड़ के उत्तर

1. बर्फ 2. सपना 3. गलत 4 दुख 5 परीक्षा फल 6 केवल एक घंटा क्योंकि अलार्म रात के आठ बजे ही बज उठेगा 7 रस्साकशी 8 ह अक्षर 9 फरवरी के महीने में 10 छिपकली 11 अक्षर 12 अंगूठी 13 नाम 14 पलकें 15 सांस
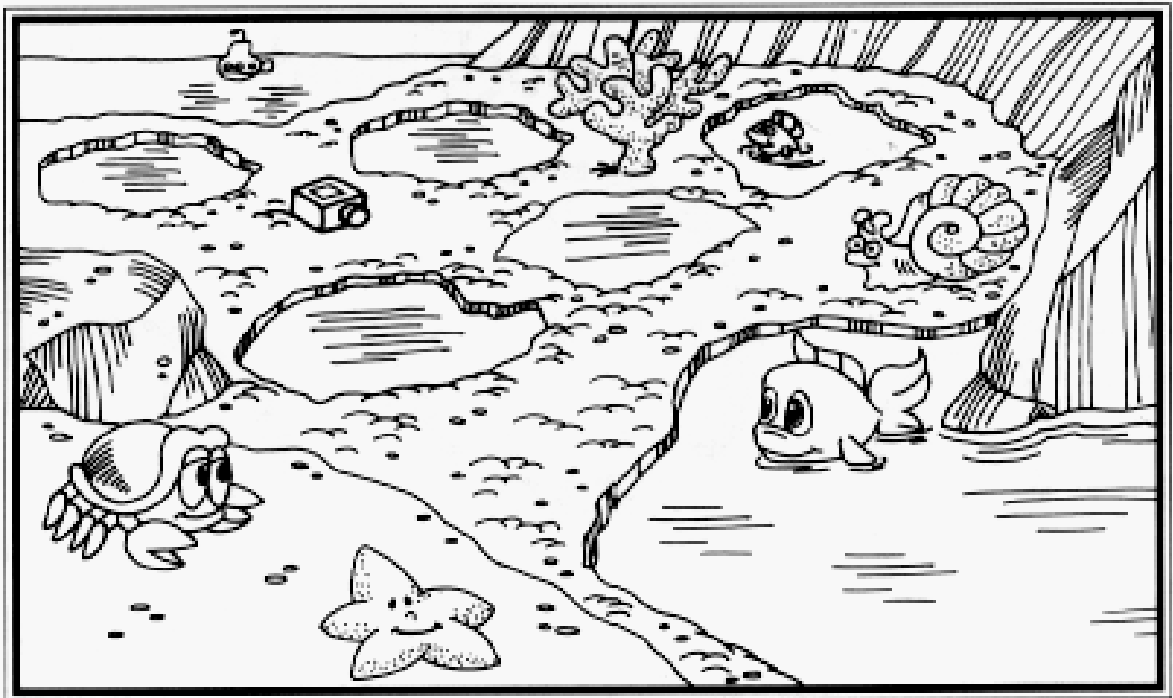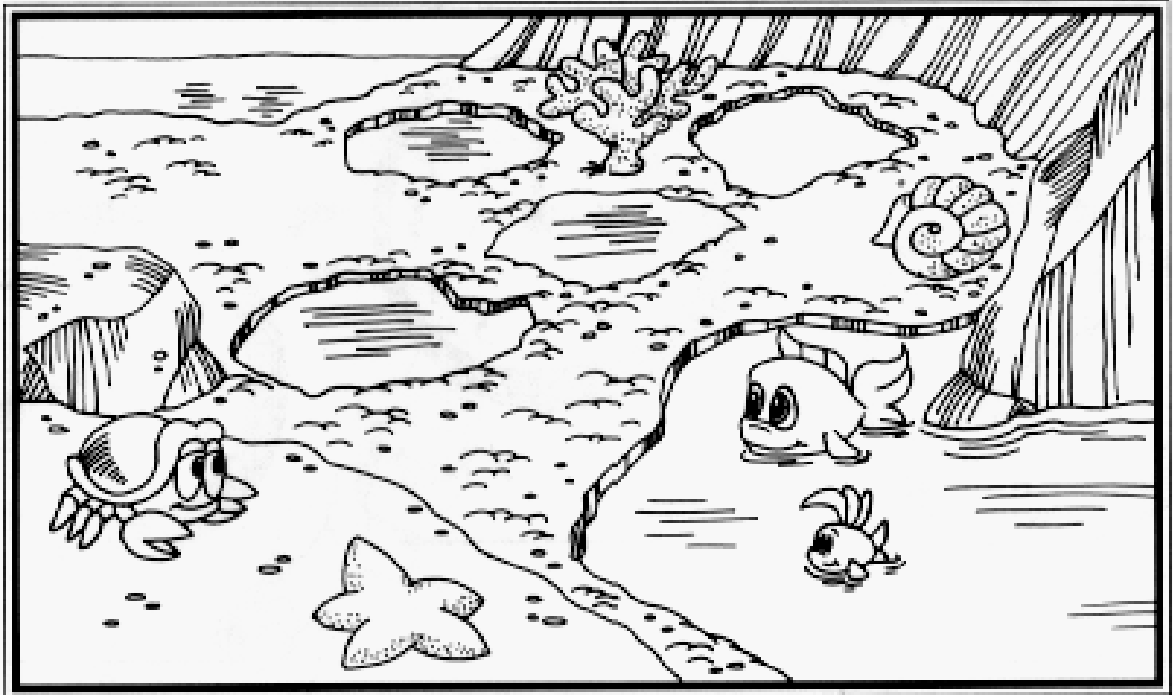
अन्तर ढूंढो ऊपर और नीचे दिए गये चित्रों में 7 अन्तर हैं। इन्हें ढूंढ कर निकालो।

पप्पू (फोन पर): अरे, सुनो, ये मैं बोल रहा हूं।

गप्पू (दूसरी तरफ फोन पर) : अरे, कितनी हैरानी की बात है! इधर भी मैं ही बोल रहा हूं।

गप्पू और चप्पू को सड़क पर पड़े तीन हथगोले (बम) मिलते हैं। वे उन्हें पुलिस स्टेशन पर जमा करवाने ले चलते हैं। बीच में ही....................

गप्पू: अगर एक गोला बीच में ही फट गया तो?

चप्पू: तो क्या? पुलिस से झूठ बोल देंगे। कह देंगे दो ही मिले थे।

शिक्षक: हिमालय की ऊंचाई कितनी है?

विद्यार्थी: 7.5 सेंटीमीटर।

शिक्षक: तुम को किसने बताया?

विद्यार्थी: मैंने अपनी भूगोल की किताब को नापा है।

राम (श्याम से): मेरे पिता जी दिन में दो बार दाढ़ी बनाते हैं।

श्याम: और मेरे पिता जी दिन में सौ बार दाढ़ी बनाते हैं।

राम: यह कैसे हो सकता है?

श्याम : क्योंकि वह नाई हैं।

टिकियाचंद जी बड़े परेशान बैठे थे। उनके मित्र ने सहानुभूति दिखलाई, ''क्यों यार, क्या बात है?''

''अरे, अपनी कुड़ी ने परेशान कर रखा है। कहती है कि शादी के बाद वह छ: बच्चे चाहती है। और यही मैं चाहता हूं कि मेरे छ: बच्चे हों।''

''तो फिर परेशानी क्या है? तुम दोनों एक सी चीज़ चाहते हो।''

''बारह बच्चों के रहने लायक मकान कहां से लाऊं, मैं इसी सोच में पड़ा हूं।''

दो युवतियों का वार्तालाप:

''सुना है कि तुमने रमेश से सगाई तोड़ दी। क्या हुआ?''

''बस, यूं ही। उसके प्रति अब मेरी भावनाएं वैसी नहीं रहीं।''

''तो तुम उसकी अंगूठी लौटा दोगी?''

''भला क्यों? अंगूठी के प्रति तो मेरी भावनाएं जरा भी नहीं बदली हैं।''

एक सज्जन ने एक महाशय को नमस्कार किया। उन महाशय ने उत्तर दिया– ''मैं मूर्खों को नमस्कार नहीं करता।''
दूसरे सज्जन ने तपाक से कहा– ''लेकिन मैं तो करता हूं।''

ଓଓଓ

रेल स्टेशन पर रुकी। एक पण्डितजी, जो सवेरे से भूखे थे, डिब्बे में चढ़े। देखा कोई सेठ कटोरदान खोले खाना खा रहा था। बस बोल ही पड़े– 'क्यों यजमान, पूरियां अकेले अकेले?'
सेठ जी बोले–'नहीं पण्डित जी महाराज। आलू मटर के साथ।'

ଓଓଓ

एक पते पर भेजा गया लिफाफा, भेजने वाले के पास वापिस लौट आया। उस पर डाकिये ने लिखा था– ''यह आदमी मर चुका है।''
गलती से फिर वही पत्र डाक में डाल दिया गया। कुछ दिन बाद वह फिर वापिस आ गया। इस बार उस पर यह लिखा था– ''यह आदमी अभी तक मृत है।''

ଓଓଓ

शराबी–भई, जरा बताना इस सड़क का दूसरा किनारा किधर है?
राहगीर– वह रहा सामने।
शराबी – कमाल है, अभी मैं उधर था तो एक साहब ने बता दिया कि दूसरा किनारा इधर है!

ଓଓଓ

''रामू, हथोड़े से ठोका–पीटी ठीक नहीं, रख इसे वहीं। नहीं तो तेरी अंगुलियां कुचल जायेंगी।''
''मेरी अंगुलियों की फिक्र मत करो मां, मैं केवल हथौड़ा मारूंगा, कील तो श्यामू पकड़ेगा।''

ଓଓଓ

तीन आदमी किसी के यहां चाय पी रहे थे। चाय खत्म करने के बाद पहले ने कप को सीधा ही रखा। दूसरे ने उसे उलट कर रख दिया और तीसरे ने लेटाकर रख दिया।
तीसरा (पहले से) : आपने ये कप सीधा क्यों रखा ?
पहला : ताकि चाय और हो तो मिल जाये।
तीसरा (दूसरे से) : और आपने ?
दूसरा : क्योंकि मुझे चाय और नहीं पीनी।
पहला और दूसरा (तीसरे से) : लेकिन अपना तो बताओ। तुमने कप ऐसे क्यों रखा ?
तीसरा : ताकि चाय और हो तो मिल जाये और नहीं हो तो नहीं मिले।

ଓଓଓ

गोलू के कारनामे

रामबाबू

– अनुराग ट्रस्ट से साभार

जीव पीढ़ी दर पीढ़ी अपने आप को अपने परिवेश के अनुसार ढालते रहते हैं, ताकि उनके जिन्दा रहने की संभावना ज्यादा बेहतर बनी रहे। इसका एक बहुत बढ़िया उदाहरण इंग्लैंड के इन पतंगों के जरिये नज़र आया। सन् 1700 के आसपास हल्के रंग के पतंगे बहुतायत में थे, जो पेड़ों की छाल पर हलके रंग के शैवाल (lichen) से बहुत आसानी से घुल मिल जाता था। इस प्रकार ये पतंगे शिकारी चिड़ियों से बच जाते थे। लेकिन सन् 1850 के आसपास फैक्टरियों का प्रदूषण इतना बढ़ गया कि पेड़ों की छाल के ऊपर की सारी सफेद शैवाल खत्म हो गई। सारे तने गहरे रंग के दिखने लगे। ऐसे में हल्के रंग के पतंगे आसानी से नजर आ जाते थे और मारे जाते थे। जल्दी ही प्रदूषित इलाकों में गहरे रंग के पतंगे बहुतायत में नजर आने लगे जो पेड़ों की छाल के साथ घुलमिल कर बच जाते थे। क्या तुम्हें ऊपर वाले चित्र में ये दोनों तरह के पतंगे नजर आ रहे हैं?

आगे और पीछे के कवर को खोल कर इकट्ठा ध्यान से देखो। क्या तुम्हें एक तोता नज़र आ रहा है? अब इस तोते के रंगों को और भी ध्यान से देखो। ये कैसे बने हैं? हां, तुमने ठीक पहचाना। ये बहुत से फोटो को मिलाकर बनाए गए हैं। इस प्रकार यह बड़ा चित्र हजारों टुकड़ों को जोड़ जोड़ कर बना है। इस प्रकार की कला को मोज़ेइक (mosaic) कहा जाता है।